राजधानी

विभागीय हिंदी पत्रिका

वर्ष 2024–25

केन्द्रीय माल एवं सेवाकर, दिल्ली क्षेत्र

राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर और नार्कोटिक्स अकादमी (नासिन), पालसमुद्रम, आन्ध्र प्रदेश, के उद्घाटन समारोह दिनांक– 16.01.2024 के छायाचित्र

राजधानी

केंद्रीय माल एवं सेवाकर, दिल्ली क्षेत्र

(उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी, लेखा परीक्षा-1, लेखा परीक्षा-2, अपील-1, अपील-2)

विभागीय हिंदी पत्रिका **वर्ष- 2024-25**

राजेश सोढ़ी
प्रधान मुख्य आयुक्त, सीजीएसटी, दिल्ली क्षेत्र

मनीष मोहन गोविल
प्रधान आयुक्त, दिल्ली उत्तर

रवि प्रताप सिंह
प्रधान आयुक्त, दिल्ली दक्षिण

निखिल चंद्रा
प्रधान आयुक्त, लेखा परीक्षा-2

पवन कुमार
आयुक्त, दिल्ली पूर्व

मो. इरफान अज़ीज़
आयुक्त, दिल्ली पश्चिम

विजय बहादुर वर्मा
आयुक्त, लेखा परीक्षा-1

दिनेश कुमार
आयुक्त, अपील-1/2

संरक्षक
राजेश सोढ़ी
प्रधान मुख्य आयुक्त, सीजीएसटी, दिल्ली क्षेत्र

प्रधान संपादक
मनीष मोहन गोविल
प्रधान आयुक्त, दिल्ली उत्तर

प्रबंध संपादक
मनीष झा
अपर आयुक्त
सीजीएसटी, दिल्ली क्षेत्र

भवन मीना
अपर आयुक्त
दिल्ली उत्तर

शौकत अली नूरवी
अपर आयुक्त
दिल्ली उत्तर

प्रबंध सह-संपादक
साहिल खरे
सहायक आयुक्त
दिल्ली उत्तर

संपादक
राम सरन सिंह
सहायक निदेशक (राजभाषा)
सीजीएसटी, दिल्ली क्षेत्र

सहयोगी: श्वेतांशु शेखर, पूजा दलाल, राहुल हक, चांदनी चोपड़ा, निकेता पाल

प्रकाशन एवं वितरण: राजभाषा अनुभाग

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, इनमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूं। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओः

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

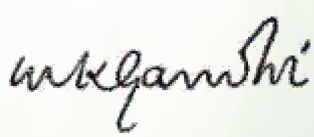

- *राजेश सोढ़ी*
प्रधान मुख्य आयुक्त
दिल्ली क्षेत्र

संदेश

विभागीय पत्रिका का यह अंक आप सबको सौंपते हुए मुझे बेहद हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से केन्द्रीय माल एवं सेवा कर, दिल्ली जोन में कार्यरत अधिकारियों एवं कार्मिकों के द्वारा अपनी भावनाएं, संवेदनाएं एवं विचारों को व्यक्त किया गया है। इसके साथ-साथ इस पत्रिका में वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों से संबंधित विवरण भी दिए गए हैं।

हमें यह गर्व और संतोष का विषय प्रतीत होता है कि विभागीय गतिविधियों, नीतियों, उपलब्धियों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को समाहित करती हुई यह हिंदी पत्रिका अपने नवीनतम अंक के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत हो रही है। यह पत्रिका न केवल विभागीय कार्यकलापों का दर्पण है, अपितु यह हमारे कर्मियों की सृजनात्मक दृष्टि, भाषा के प्रति अनुराग और सामाजिक सरोकारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

सरकारी कार्य प्रणाली में हिंदी का प्रयोग न केवल संवैधानिक दायित्व है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं जनसंपर्क की सशक्त साधना का भी आधार है। इस पत्रिका के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते हैं कि प्रशासनिक व्यवस्था में हिंदी भाषा की उपयोगिता एवं प्रभावशीलता अब मात्र औपचारिकता नहीं, बल्कि एक आवश्यक और व्यवहारिक आवश्यकता बन चुकी है।

इस अंक में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने अनुभवों, विचारों तथा रचनात्मक लेखन के माध्यम से एक प्रेरणादायक प्रयास किया है। मैं सभी योगदानकर्ताओं, संपादक मंडल तथा प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को इस उत्तम पहल हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद एवं भाषा के प्रति अनुराग को प्रोत्साहित करने वाली सिद्ध होगी। आइए, हम सब मिलकर हिंदी के प्रचार-प्रसार और विभागीय उत्कृष्टता के इस अभियान को निरंतर आगे बढ़ाएँ।

मनीष मोहन गोविल
प्रधान आयुक्त,
दिल्ली उत्तर

संदेश

विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजधानी' के इस नए अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे विभाग की साहित्यिक और रचनात्मक प्रतिभा का मंच है, बल्कि यह हम सभी को एक सूत्र में बांधने का भी सशक्त माध्यम है।

मुझे यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे साथियों ने अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर इतनी उत्कृष्ट रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इस अंक में कविताएँ, कहानियाँ, लेख और विभाग की गतिविधियों पर आधारित जानकारी का सुंदर समन्वय है, जो हमारी विविधता और एकता को दर्शाता है।

यह पत्रिका हमारे विचारों को साझा करने, एक-दूसरे को जानने और हिंदी भाषा के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण जरिया है। यह भाषा केवल हमारी संस्कृति और पहचान का ही नहीं बल्कि दैनिक क्रियाकलापों में व्यापक जनसमूह से संवाद स्थापित करने का भी महत्वपूर्ण जरिया है। हिंदी हमारी राजभाषा है और इसे बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक कर्तव्य भी है।

मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल और सभी योगदानकर्ताओं को उनके समर्पण और परिश्रम के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ। उनका यह प्रयास निश्चित रूप से हमारे विभाग में साहित्यिक अभिरुचि को और अधिक प्रोत्साहित करेगा।

आप सभी से मेरा आग्रह है कि इस पत्रिका को रुचिपूर्वक पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया से हमे अवगत करवाएं। हमारा सदैव यही प्रयास रहेगा कि हम इस पत्रिका और भी बेहतर बनाएं और इसमे निरंतर सुधार कर इस पत्रिका के स्तर को और भी बढ़ा सकें।

शुभकामनाएं!

राम सरन सिंह
सहायक निदेशक
(राजभाषा), दिल्ली क्षेत्र

संपादकीय

जिस प्रकार से एक माली बगीचों के विभिन्न प्रकार के फूलों से सुसज्जित एक माला तैयार करता है, इसी प्रकार से एक संपादक का कार्य विभिन्न प्रकार के विचारों, संवेदनाओं, अनुभवों एवं कार्यक्रमों से जुड़ी विभिन्न प्रकार के विवरण तथा उपलब्धियां को समाहित करते हुए एक पत्रिका का प्रकाशन करना है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार कार्यालयों में राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन एवं प्रचार प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इन निर्देशों के अनुसरण में प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, केंद्रीय माल एवं सेवा कर दिल्ली क्षेत्र के द्वारा हिंदी पत्रिका राजधानी का प्रकाशन किया जा रहा है। राजधानी पत्रिका के इस अंक में कार्यालय प्रमुख से लेकर विभिन्न संवर्ग के अधिकारियों एवं कार्मिकों के लेख, रचनाएं, कविता, संस्मरण एवं विभागीय गतिविधियों एवं उपलब्धियां से संबंधित विवरण एवं फोटोग्राफ को सम्मिलित करते हुए इसका कलेवर आकर्षक, सुरुचि पूर्ण, ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े विभिन्न कार्यों एवं प्रकाशन सामग्री प्रदान करने के लिए मैं, अधिकारियों एवं कार्मिकों तथा अपने सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूं, बिना आप लोगों के सहयोग के पत्रिका के अपने वर्तमान स्वरूप में आना लगभग असंभव था। भविष्य में भी आपसे इसी प्रकार के सहयोग की कामना करता हूं।

मैं इस पत्रिका को पढ़ने वाले सुधी पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि कृपया इस पत्रिका को पढ़ने के उपरांत इस पत्रिका की प्रकाशन सामग्री एवं इसके कलेवर के संबंध में अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया एवं सुझाव देकर इस पत्रिका को उपयोगी, अधिक समृद्ध और ज्ञानवर्धक बनाने में हमें सहयोग करें हम आपके सहयोग से ही इस पत्रिका के निरंतर प्रकाशन और इसके उज्जवल भविष्य की आशा करते हैं।

धन्यवाद

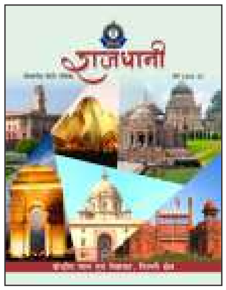

इस अंक में

क्र. सं.	संदेश/लेख/कविता	लेखक	पृ. सं.
1	भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग एवं एंटीट्रस्ट एजेंसियों की भूमिका	-मनीष मोहन गोविल, प्रधान आयुक्त, दिल्ली उत्तर	09
2	चक्रीय अर्थव्यवस्था के साथ भारत का साक्षात्कार	-शंकर प्रसाद शर्मा, अपर आयुक्त, दिल्ली क्षेत्र	13
3	संवाद- सीजीएसटी दिल्ली उत्तर की पहल	-तन्वी सोनी, सहायक आयुक्त, दिल्ली उत्तर	18
4	भगवान की नज़र में सभी प्राणी सामान हैं	-जगमोहन पंवार, सहायक आयुक्त, दिल्ली दक्षिण (सेवानिवृत)	21
5	पैरा स्पोर्ट्स और मैं	-राम सरन सिंह, सहायक निदेशक, (राजभाषा)	25
6	यात्रा संस्मरण: मेरी मणिमहेश कैलाश यात्रा	-विपुल शर्मा, अधीक्षक (सतर्कता), सी.जी.एस.टी. दिल्ली उत्तर	32
7	लघुकथा: देश प्रेम	-संचित पाहूजा, निरीक्षक, सी.सी.ए., दिल्ली क्षेत्र	39
8	स्व-सहायता (सेल्फ हेल्प) पुस्तकें कितनी प्रभावी?	-ऋषि पाल सिंह, अधीक्षक, दिल्ली उत्तर	41
9	विशेष कवरेज: पुरानी दिल्ल	-संजय कुमार बंसल, सहायक आयुक्त, दिल्ली उत्तर	44
10	नासिन, पालसमुद्रम	-राम सरन सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा)	52
11	प्रार्थना	-संजय कुमार बंसल, सहायक आयुक्त (पुरानी दिल्ली मण्डल)	60
12	मन की अभिलाषा	-ज्योति, अधीक्षक, लेखा परीक्षा-2	61
13	मेरी माँ	-प्रेरणा सिंह, अधीक्षक	62
14	जीवन में जब विपदा आए	-विक्रम पाल मित्तल, अधीक्षक, दिल्ली पश्चिम	63
15	अरे माफी.. फिर भूल गया बोलना	-संजीव मारवाह, प्रशासनिक अधिकारी (सेवानिवृत)	65
16	क्या लिखूँ कुछ आये ना अन्त: प्रत्यय में	-अरविंद गुर्जर, पी.सी.सी.ओ. दिल्ली क्षेत्र	66

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग एवं एंटीट्रस्ट एजेंसियों की भूमिका

- मनीष मोहन गोविल, प्रधान आयुक्त, दिल्ली उत्तर

हाल ही में, डिजिटल कंपनियों के खिलाफ दुनिया भर में स्पर्धारोधी (एंटीट्रस्ट) मामले सामने आए हैं, जिससे स्पर्धारोधी (एंटीट्रस्ट) जांच की प्रकृति और प्रतिस्पर्धा एजेंसियों की भूमिका को लेकर सवाल उठने लगे हैं। दरअसल, किसी भी देश में प्रतिस्पर्धा कानून (या एंटीट्रस्ट कानून) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बाजार में उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच संतुलन बना रहे। यह कानून यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी कंपनी अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल न करे, जैसे कि अन्य कंपनियों को बाहर करना, शोषण करना या मिलकर गलत तरीके से काम करना, ताकि बाजार में असंतुलन और अनियमितता न फैले।

हाल ही में समाप्त हुए ओलंपिक खेलों से एक समानता खींची जा सकती है, जिसमें बाजारों को खेलों के क्षेत्र से तुलना किया जा सकता है, क्योंकि दोनों के केंद्र में एक स्पष्ट सिद्धांत है- प्रतिस्पर्धा। इसे एक उदाहरण से समझाया जा सकता है: 1998 के सियोल ओलंपिक में बेन जॉनसन द्वारा 100 मीटर दौड़ में किया गया रिकॉर्ड-तोड़ प्रदर्शन, जिसे पहले उनके असाधारण कौशल और मेहनत का परिणाम माना गया था, वह असल में एक धोखाधड़ी था। यह जीत किसी प्रकार की प्राकृतिक क्षमता या कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह ड्रग्स (डोपिंग) के कारण संभव हुई थी। जब यह खुलासा हुआ कि जॉनसन ने स्टेरॉयड जैसी प्रदर्शन बढ़ाने वाली दवाओं का सेवन किया था, तो उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया और उनके रिकॉर्ड को रद्द कर दिया गया। यह घटना सिर्फ बेन जॉनसन तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि कई अन्य शीर्ष एथलीटों पर भी यह आरोप लगे जिन्होंने डोपिंग और प्रदर्शन-सुधारक पदार्थों का इस्तेमाल किया था। इसने उन खिलाड़ियों की मेहनत और संघर्ष को बर्बाद कर दिया जिन्होंने बिना किसी धोखाधड़ी के, ईमानदारी से कड़ी मेहनत की थी। इन घटनाओं के बाद 1999 में वर्ल्ड एंटी-डोपिंग एजेंसी (WADA) की स्थापना की गई, जिसका आदर्श वाक्य "Play True" था WADA, वर्ल्ड एंटी-डोपिंग कोड की निगरानी करता है और एक समान मानक सेट करता है ताकि एथलीटों के लिए डोपिंग-मुक्त वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

यह उदाहरण दर्शाता है कि किसी भी प्रतिस्पर्धा में निष्पक्षता का महत्वपूर्ण स्थान है, चाहे वह खेलों में हो या बाजार में। जब कोई प्रतियोगी अनैतिक या अवैध तरीकों से जीत हासिल करता है, तो यह पूरी प्रणाली को नुकसान पहुँचाता है, और ऐसे में प्रतिस्पर्धा का उद्देश्य ही खत्म हो जाता है। जैसे कि खेलों में डोपिंग को रोका जाता है, ठीक वैसे ही बाजारों में स्पर्धारोधी (एंटीट्रस्ट) कानूनों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रतिस्पर्धा

निष्पक्ष और ईमानदार तरीके से हो, ताकि हर खिलाड़ी को समान अवसर मिले।

बाजारों में प्रतिस्पर्धा एजेंसियों की भूमिका खेलों के क्षेत्र में वर्ल्ड एंटी-डोपिंग एजेंसी (WADA) की भूमिका से मिलती-जुलती है। कंपनियां बाजारों में अपनी लागत को कम करने, नवाचार को बढ़ावा देने और उपभोक्ताओं के लिए कीमतों को घटाने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। प्रतिस्पर्धा कंपनियों को वैश्विक बाजार तक पहुंच प्रदान करती है और उपभोक्ताओं को कम कीमतों पर बेहतर गुणवत्ता के सामान और अधिक विकल्प देती है। इसके परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि होती है, जो अर्थव्यवस्था की वृद्धि में मदद करती है। इसके अलावा, यह कंपनियों को लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नवाचार करने के लिए मजबूर करती है।

हालांकि, यदि एक प्रमुख कंपनी "प्रदर्शन-सुधारक दवाओं" का इस्तेमाल करती है, जिसे बाजार के संदर्भ में पूंजी का अत्यधिक खर्च, विशेष प्राथमिकताओं को प्रदान करना और प्रतिस्पर्धियों को पहुंच से वंचित करना जैसी गतिविधियाँ की जाती हैं। इससे ऐसी कंपनियों को खत्म करने या उन्हें अधिग्रहित करने की क्षमता उत्पन्न होती है, जिनके पास ये संसाधन नहीं होते, और इस प्रकार यह अंततः उपभोक्ताओं को नुकसान पहुँचाता है। इस प्रकार, ऐसी कंपनियों के आचरण की जांच करने के लिए एक विशेषज्ञ निकाय की आवश्यकता होती है, ताकि उनकी मिलीभगत का पता चल सके। यही असल में स्पर्धारोधी (एंटीट्रस्ट) जांच का उद्देश्य और भूमिका है।

एंटीट्रस्ट जांचों ने सार्वजनिक ध्यान आकर्षित किया जब अमेरिका के तेल बाजारों में प्रतिस्पर्धा को जॉन डी. रॉकफेलर और उनकी एकाधिकारवादी कंपनी स्टैंडर्ड ऑयल द्वारा बर्बाद कर दिया गया। रॉकफेलर का उद्देश्य एकाधिकार स्थापित करना था, जिसके लिए उन्होंने अधिग्रहण, प्रतिस्पर्धियों का समाप्ति, और परिवहन व संचार माध्यमों के स्वामित्व के माध्यम से अपनी पकड़ मजबूत की। उन्होंने लगभग 90% अमेरिकी तेल बाजार पर नियंत्रण कर लिया था, जिससे उनके पास वित्तीय शक्ति और राजनीतिक प्रभाव था। जब उनके व्यापारिक व्यवहार और स्वामित्व की संरचनाओं की जांच शेरमैन एक्ट 1890 के तहत अमेरिकी न्याय विभाग द्वारा की गई, तो यह पाया गया कि उनका एकाधिकार प्रतिस्पर्धा को नुकसान पहुँचा रहा था। इसके परिणामस्वरूप, उनकी कंपनी को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित कर दिया गया, ताकि वे स्वतंत्र रूप से बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सकें। यह घटना एंटीट्रस्ट कानूनों की आवश्यकता को उजागर करती है, जो बाजारों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करती हैं।

बाजारों का विकास तब से हो रहा है, जब से एंटीट्रस्ट कार्रवाईयों की शुरुआत हुई, जिनका उद्देश्य प्रमुख कंपनियों के एकाधिकारपूर्ण कार्यों को नियंत्रित करना था। ये बाजार एक जटिल नेटवर्क की तरह होते हैं, जिसमें खरीदार, आपूर्तिकर्ता और मध्यस्थ सभी जुड़े होते हैं, और प्रत्येक बाजार अपने विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में काम करता है। कंपनियां एक-दूसरे से अपने संबंधित बाजारों में प्रतिस्पर्धा करती हैं, ताकि अधिक

लाभ प्राप्त कर सकें, ठीक उसी तरह जैसे ओलंपिक खेलों में खिलाड़ी और टीमें विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में पदक जीतने के लिए संघर्ष करती हैं।

हालांकि, बाजारों में उच्च दांव की स्थिति उन्हें विकृतियों के लिए संवेदनशील बना सकती है, जैसे कि मिलकर काम करना (साजिश), जानकारी का असमान वितरण और प्रवेश बाधाएं। कभी-कभी सरकारी नियम और मुकदमे भी अनजाने में बाजारों में विकृतियों का कारण बन सकते हैं। इस प्रकार, एंटीट्रस्ट कानूनों और कार्रवाईयों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि बाजारों में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनी रहे और किसी भी प्रकार की गलत या एकाधिकार जैसी गतिविधियां उपभोक्ताओं और अन्य प्रतिस्पर्धियों के लिए हानिकारक न हो।

प्रतिस्पर्धा कानून का मुख्य सिद्धांत यह है कि एकाधिकार होना बुरा नहीं है, लेकिन अगर किसी कंपनी ने अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल किया, तो वह गलत है। कंपनियों को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, लेकिन उन्हें आपस में मिलकर गलत तरीके से काम नहीं करना चाहिए। एंटीट्रस्ट जांच की प्रक्रिया में तीन महत्वपूर्ण कदम होते हैं: सबसे पहले, हानि का सिद्धांत तैयार करना, फिर जांच के जरिए सबूत इकठ्ठा करना, और इन सबूतों को कानूनी सिद्धांतों के आधार पर परखना। हानि का सिद्धांत आर्थिक सिद्धांतों पर आधारित होता है और समय के साथ विकसित होता है।

हाल के समय में, प्लेटफार्म-आधारित व्यापार मॉडल, नेटवर्क प्रभाव वाले बहुआयामी (मल्टी-साइडेड) बाजारों ने प्रतिस्पर्धा से जुड़ी समस्याओं को और अधिक जटिल बना दिया है, जिससे इनका समाधान करना मुश्किल हो गया है। अक्सर, इन मुद्दों पर अदालतों में समय की बर्बादी होती है, जहां बहसें होती हैं, लेकिन ठोस सबूतों के बजाय तर्कों पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसलिए, प्रतिस्पर्धा कानून को सही तरीके से लागू करने के लिए जरूरी है कि सभी जांचें ठोस प्रमाणों और तथ्यों पर आधारित हों, न कि सिर्फ बहसों और मतों पर।

लगभग सभी देशों में बाजारों को नियंत्रित करने के लिए किसी न किसी प्रकार का प्रतिस्पर्धा प्राधिकरण होता है। अमेरिका में दो बहुत प्रभावशाली एंटीट्रस्ट संस्थाएं हैं- फेडरल ट्रेड कमीशन (FTC) और डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस (DOJ)। यूरोप में, प्रतिस्पर्धा से जुड़े मामलों का प्रबंधन यूरोपीय आयोग के तहत डायरेक्टर जनरल ऑफ कॉम्पिटिशन के कार्यालय द्वारा किया जाता है। इसके अलावा, इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन नेटवर्क (ICN), UNCTAD, OECD, और BRICS जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच हैं, जहां विभिन्न देशों की प्रतिस्पर्धा एजेंसियां आपस में सहयोग करती हैं।

पश्चिमी देशों से अलग, भारत में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) एक नया नियामक है, लेकिन इसने बहुत प्रभावशाली कानूनी ढांचा तैयार किया है और एंटीट्रस्ट मामलों को सुलझाने की क्षमता विकसित की है, जो भारत के आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए काम करता है।

2020 में, टोक्यो ओलंपिक समिति ने अपने आदर्श वाक्य में एक नया शब्द जोड़ा, जो अब "FASTER, HIGHER AND STRONGER &

TOGETHER" के रूप में जाना जाता है। यह शब्द खेलों के एकजुटता और सामूहिक प्रयास के महत्व को दर्शाता है, जो यह बताता है कि किसी भी प्रकार के संकट का सामना करते हुए भी, हम अपनी पूरी क्षमता के साथ उत्कृष्टता को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। ओलंपिक का यह संदेश सिर्फ खेलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र में एकता और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता को उजागर करता है।

आज जब दुनिया महामारी के बाद के आर्थिक संकटों से जूझ रही है, यह सिद्धांत पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में आई मंदी और अन्य संकटों के बीच, अब यह जरूरी हो गया है कि हम सब मिलकर काम करें, एकजुट होकर इन चुनौतियों का सामना करें और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करें। इसमें सिर्फ सरकारों का ही नहीं, बल्कि व्यवसायों, उपभोक्ताओं और सभी आर्थिक खिलाड़ियों का सहयोग आवश्यक है, ताकि हम एक मजबूत और स्थिर अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ सकें।

बाजारों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बनाए रखना इस प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। प्रतिस्पर्धा सिर्फ सस्ती और बेहतर सेवाओं के माध्यम से उपभोक्ताओं को लाभ नहीं देती, बल्कि यह कंपनियों को नवाचार करने और अपनी सेवाओं और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए भी प्रेरित करती है। जब बाजारों में प्रतिस्पर्धा होती है, तो इसका सीधा फायदा उपभोक्ताओं को मिलता है, जिससे उनकी जीवनशैली बेहतर होती है और वे अधिक विकल्पों के साथ सस्ती और गुणवत्तापूर्ण सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि बाजारों में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनी रहे, एक मजबूत और सक्षम प्रतिस्पर्धा प्राधिकरण की आवश्यकता है। यह प्राधिकरण न केवल बाजार में किसी प्रकार के अनुचित एकाधिकार या गलत प्रथाओं को रोकने का काम करता है, बल्कि यह उपभोक्ताओं और छोटे व्यवसायों के हितों की भी रक्षा करता है। इस प्राधिकरण का काम समय पर और उचित तरीके से सुधार करना होता है, ताकि बाजार में किसी प्रकार की विकृति न हो और प्रतिस्पर्धा बनी रहे।

एक मजबूत प्रतिस्पर्धा प्राधिकरण हमारे लिए सिर्फ कानूनी आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह आर्थिक पुनरुद्धार और समृद्धि की कुंजी है। यदि यह प्राधिकरण सही तरीके से काम करता है, तो यह न केवल वर्तमान संकट से उबरने में मदद करेगा, बल्कि भविष्य में आने वाली किसी भी आर्थिक चुनौती का सामना करने के लिए हमें तैयार करेगा। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम सभी मिलकर एक स्वस्थ, निष्पक्ष और प्रतिस्पर्धी बाजार व्यवस्था की दिशा में काम करें, ताकि एक मजबूत और समृद्ध वैश्विक अर्थव्यवस्था का निर्माण हो सके।

चक्रीय अर्थव्यवस्था के साथ भारत का साक्षात्कार

- शंकर प्रसाद शर्मा, अपर आयुक्त, दिल्ली क्षेत्र

भारत, कई अन्य देशों की तरह, कई दशकों से एक रेखीय आर्थिक मॉडल का पालन कर रहा है। इस मॉडल में संसाधनों का दोहन, उनका उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए करना और फिर उपयोग के बाद उनका निपटान करना शामिल है, जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हुआ है और अपशिष्टों का संचय हुआ है। हालाँकि, भारत की तेज़ी से बढ़ती आबादी और अर्थव्यवस्था ने संसाधनों की खपत और अपशिष्ट उत्पादन में वृद्धि की है, जिससे एक चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण करना अनिवार्य हो गया है। इस पेपर में, हम एक रेखीय अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की वर्तमान स्थिति और यह कैसे एक चक्रीय अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो सकता है, इसका पता लगाएंगे।

भारत की रैखिक अर्थव्यवस्था की स्थिति:

भारत का वर्तमान आर्थिक मॉडल काफी हद तक रैखिक है, जहाँ संसाधनों को निकाला जाता है, संसाधित किया जाता है और उपभोक्तओं को बेचे जाने वाले उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। उपयोग के बाद, इन उत्पादों का निपटान किया जाता है, जिससे बड़ी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न होता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, भारत हर साल 62 मिलियन टन से अधिक अपशिष्ट उत्पन्न करता है, और 2030 तक इसके बढ़कर 165 मिलियन टन होने की उम्मीद है। इस अपशिष्ट का अधिकांश हिस्सा लैंडफिल में या खुले स्थानों पर फेंक दिया जाता है, जिससे पर्यावरण का क्षरण और स्वास्थ्य संबंधी खतरे पैदा होते हैं।

भारत का चक्रीय अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तन:

भारत ने चक्रीय अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तन की दिशा में कई कदम उठाए हैं। 2015 में, भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) शुरू किया, जिसका उद्देश्य 2019 तक भारत को स्वच्छ और खुले में शौच से मुक्त बनाना है। इस मिशन में अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार के लिए पहल भी शामिल है, जैसे अपशिष्ट प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण सुविधाएँ स्थापित करना और खाद और बायोगैस प्रौद्योगिकियों के उपयोग को बढ़ावा देना।

इसके अलावा, भारत सरकार ने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 जैसी नीतियाँ शुरू की हैं, जिसके तहत उत्पादकों को अपने उत्पादों के जीवन-काल के अंत में निपटान की ज़िम्मेदारी लेनी होती है। सरकार ने सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कोष भी शुरू किया है।

भारत में चक्रीय बिजनेस मॉडल को अपनाने में भी

वृद्धि देखी गई है, जैसे कि उत्पाद-ए-ए-सर्विस और शेयलरग मॉडल, जो संसाधन खपत और अपशिष्ट उत्पादन को कम करने में मदद करते हैं। भारत में कई। स्टार्ट-अप भी ऐसे टिकाऊ उत्पाद और सेवाएँ विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं जिन्हें दोबारा इस्तेमाल, मरम्मत या रीसाइकिल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

हालाँकि, भारत को अभी भी सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है अपशिष्ट प्रबंधन और रीसाइक्लिग के लिए पर्याप्त बुनियादी ढाँचे की कमी। भारत को अपशिष्ट प्रसंस्करण और रीसाइक्लिग सुविधाओं में निवेश करने और अपशिष्ट संग्रह और पृथक्करण प्रणालियों में सुधार करने की आवश्यकता है ताकि अपशिष्ट का कुशल और प्रभावी प्रसंस्करण हो सके।

एक और चुनौती व्यवसायों और उपभोक्ताओं के बीच सर्कुलर अर्थव्यवस्था अवधारणाओं के बारे में जागरूकता और समझ की कमी है। सरकार को सर्कुलर अर्थव्यवस्था प्रथाओं को अपनाने को बढ़ावा देने और उपभोक्ताओं को टिकाऊ उपभोग पैटर्न अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता अभियान और शिक्षा कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है।

भारत के सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए सभी क्षेत्रों और हितधारकों के ठोस प्रयास की आवश्यकता होगी। सरकार को एक सहायक नीतिगत माहौल बनाने और सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर कदम को सक्षम करने के लिए बुनियादी ढांचे और अनुसंधान और विकास में निवेश करने की आवश्यकता है। व्यवसायों को सर्कुलर बिजनेस मॉडल अपनाने और अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं में टिकाऊ प्रथाओं को शामिल करने की आवश्यकता है। उपभोक्ताओं को टिकाऊ उपभोग पैटर्न अपनाने और टिकाऊ उत्पादों और सेवाओं के विकास का समर्थन करने की आवश्यकता है। एक साथ काम करके, भारत एक सर्कुलर अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ा सकता है और एक टिकाऊ और सतत भविष्य बना सकता है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था की राह में बाधाएं।

भारत के चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण को सीमित करने वाली कई बाधाएं हैं:

(1) जागरूकता और समझ की कमी: व्यवसायों, नीति निर्माताओं और उपभोक्ताओं के बीच चक्रीय अर्थव्यवस्था के लाभों और इसे अपनाने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता और समझ की कमी है।

(2) सीमित बुनियादी ढाँचा: भारत में अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रण के लिए सीमित बुनियादी ढाँचा है, जो चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रथाओं को लागू करना मुश्किल बनाता है।

(3) अकुशल अपशिष्ट संग्रह और पृथक्करणः भारत के कई हिस्सों में, अपशिष्ट संग्रह और पृथक्करण अकुशल हैं, जो पुनर्चक्रण प्रक्रिया में बाधा डालते हैं और मूल्यवान संसाधनों के निपटान की ओर ले जाते हैं।

(4) पुनर्चक्रित सामग्रियों की सीमित उपलब्धताः भारत में पुनर्चक्रित सामग्रियों की सीमित उपलब्धता है, जो व्यवसायों के लिए अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं में पुनर्चक्रित सामग्रियों को शामिल करना मुश्किल बनाता है।

(5) प्रोत्साहनों की कमीः व्यवसायों के लिए सर्कुलर अर्थव्यवस्था प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहनों की कमी है, जैसे कि कर क्रेडिट या सब्सिडी, जो उनके लिए चक्रीय एवं टिकाऊ प्रथाओं को लागू करना अधिक महंगा बनाता है।

(6) सीमित अनुसंधान और विकासः सर्कुलर अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सीमित अनुसंधान और विकास है, जो रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नई तकनीकों और समाधानों के विकास में बाधा डालता है।

(7) सामाजिक-आर्थिक कारकः भारत के कई हिस्सों में, गरीबी और शिक्षा का निम्न स्तर सर्कुलर अर्थव्यवस्था प्रथाओं को अपनाने को सीमित करता है।

(8) ठोस प्रयासों की कमीः प्रयास अधिक व्यक्तिगत रूप से संचालित और अलग-अलग हैं। राष्ट्रीय मिशन सर्कुलर अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए सभी हितधारकों को शामिल करने वाला एक समन्वित प्रयास आवश्यक है।

इन बाधाओं को दूर करने के लिए, भारत को जागरूकता और शिक्षा कार्यक्रम बनाने, अपशिष्ट प्रबंधन और रीसाइक्लिंग के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार करने, सर्कुलर अर्थव्यवस्था प्रथाओं के लिए प्रोत्साहन प्रदान करने और सर्कुलर अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इन बाधाओं को दूर करने तथा चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ाने के प्रयास को तीव्र करने के लिए बहु-हितधारक दृष्टिकोण तथा सरकारी एजेंसियों, व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों और उपभोक्ताओं के बीच सहयोग की भी आवश्यकता होगी।

भारत को चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए।

एक चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए विभिन्न क्षेत्रों और हितधारकों को शामिल करते हुए एक व्यवस्थित और एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यहाँ कुछ प्रमुख कदम दिए गए हैं जो भारत इस बदलाव को करने के लिए उठा सकता हैः

(1) एक व्यापक चक्रीय अर्थव्यवस्था नीति विकसित करेंः भारत को एक नीतिगत ढाँचा बनाने की

आवश्यकता है जो चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लक्ष्यों, रणनीतियों और तंत्रों को रेखांकित करता है। यह नीति व्यापक शोध और हितधारकों के परामर्श पर आधारित होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यह प्रभावी और व्यवहार्य है।

(2) अपशिष्ट में कमी और प्रबंधन को बढ़ावा देना: भारत को अपशिष्ट उत्पादन को कम करने और अपशिष्ट को अधिक कुशलता से प्रबंधित करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इसमें रीसाइक्लिंग, खाद बनाने और अपशिष्ट से ऊर्जा में रूपांतरण को बढ़ावा देने जैसे उपाय शामिल हो सकते हैं।

(3) संधारणीय उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहित करें: भारत को ऐसे संधारणीय उत्पादों और सेवाओं के उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहित करना चाहिए जिन्हें पुनः उपयोग, मरम्मत या पुनर्चक्रण के लिए डिज़ाइन किया गया हो। इसे कर प्रोत्साहन, उत्पाद लेबलिंग और जागरूकता अभियान जैसे उपायों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

(4) चक्रीय व्यवसाय मॉडल विकसित करें: भारत को व्यवसायों को सर्कुलर व्यवसाय मॉडल अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जैसे उत्पाद-के-रूप-में-सेवा, पट्टे पर देना और साझा करना। इससे संसाधन की खपत और अपशिष्ट उत्पादन को कम करने में मदद मिल सकती है, साथ ही नए व्यावसायिक अवसर भी पैदा हो सकते हैं।

(5) नवाचार और प्रौद्योगिकी में निवेश करें: भारत को उन्नत पुनर्चक्रण प्रौद्योगिकी, संधारणीय सामग्री और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे नए सर्कुलर समाधान विकसित करने के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी में निवेश करना चाहिए।

(6) हितधारकों के साथ सहयोग करें: भारत को एक साझा दृष्टिकोण बनाने और एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए सरकारी एजेंसियों, व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों और उपभोक्ताओं सहित विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग करना चाहिए।

(7) प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन: भारत को एक सर्कुलर अर्थव्यवस्था की दिशा में प्रगति को ट्रैक करने और उन क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एक निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली स्थापित करनी चाहिए जहाँ अतिरिक्त कार्रवाई की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर, चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के लिए सभी क्षेत्रों और हितधारकों की ओर से ठोस प्रयास की आवश्यकता है, और भारत को एक टिकाऊ और लचीला भविष्य बनाने के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

भारत को चक्रीय अर्थव्यवस्था के रूप में सक्षम करने के लिए नीतिगत बदलाव की आवश्यकता।

चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण को सक्षम

करने के लिए, भारत को निम्नलिखित क्षेत्रों की ओर अपना नीतिगत फोकस बदलने की आवश्यकता है:

(1) अपशिष्ट उत्पादन को कम करना: भारत को अपशिष्ट कम करने की रणनीतियों जैसे कि उपयोग कम करना, पुन: उपयोग करना और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देकर अपशिष्ट उत्पादन को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। सरकार को उत्पादकों को उनके उत्पादों के जीवन-काल के अंत में निपटान के लिए जिम्मेदार बनाने के लिए विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी (EPR) विनियम भी पेश करने चाहिए।

(2) संधारणीय उपभोग और उत्पादन को बढ़ावा देना: भारत को पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों और संधारणीय विनिर्माण प्रथाओं के उपयोग को बढ़ावा देकर संधारणीय उपभोग और उत्पादन पैटर्न को प्रोत्साहित करना चाहिए। सरकार ऐसी नीतियाँ भी पेश कर सकती है जो उद्योगों में संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करती हैं, जैसे कि पर्यावरण के अनुकूल व्यवसायों के लिए कर क्रेडिट या सब्सिडी।

(3) चक्रीय बिजनेस मॉडल का समर्थन करना: भारत को उत्पाद-के-रूप-में-सेवा, पट्टे पर देना और साझा करना जैसे सर्कुलर बिजनेस मॉडल का समर्थन करने की आवश्यकता है। सरकार सर्कुलर बिजनेस मॉडल अपनाने वाली कंपनियों को वित्तीय सहायता या प्रोत्साहन प्रदान करके ऐसा कर सकती है।

(4) अपशिष्ट प्रबंधन अवसंरचना में सुधार: भारत को अपशिष्ट के कुशल और प्रभावी संग्रह, पृथक्करण और प्रसंस्करण को सक्षम करने के लिए अपने अपशिष्ट प्रबंधन अवसंरचना में सुधार करने की आवश्यकता है। इसमें पुनर्चक्रण सुविधाओं और अपशिष्ट से ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में निवेश करना शामिल हो सकता है।

(5) अनुकूल विनियामक वातावरण बनाना: भारत को एक विनियामक वातावरण बनाने की आवश्यकता है जो एक चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर प्रयासों को समर्थन करता है। इसमें ऐसे नियम लागू करना शामिल हो सकता है जो पुनर्चक्रित सामग्रियों के उपयोग को बढ़ावा देते हैं या कंपनियों को अपने पर्यावरण प्रदर्शन पर रिपोर्ट करने की आवश्यकता होती है।

(6) नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना: भारत को नई और अधिक कुशल पुनर्चक्रण और अपशिष्ट प्रबंधन प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहिए।

कुल मिलाकर, भारत को चक्रीय अर्थव्यवस्था के लिए एक सहायक नीति वातावरण बनाने के लिए एक बहु-हितधारक दृष्टिकोण अपनाने और सरकारी एजेंसियों, व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों और उपभोक्ताओं सहित विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। ❑

संवाद- सीजीएसटी दिल्ली उत्तर की पहल

-तन्वी सोनी, सहायक आयुक्त, दिल्ली उत्तर

'संवाद' - सीजीएसटी दिल्ली उत्तर आयुक्तालय की एक अग्रणी पहल है जिसने trade outreach कार्यक्रमों के परिदृश्य को बदलकर रख दिया है। 'संवाद' की परिकल्पना एक व्यापक पहल के रूप में की गयी है जिसके अंतर्गत करदाताओं एवं कर-प्रशासन के बीच बहुस्तरीय बातचीत को विभिन्न माध्यमों पर बढ़ावा दिया जाएगा। पिछले एक साल में, हमारे field offices ने 'संवाद' के अंतर्गत कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं जिनमें सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSM), व्यापार संघों और व्यवसायों की उत्साहजनक भागीदारी देखी गई है।

फरवरी 2024 में, हमने करोल बाग के दिल्ली स्कूटर ट्रेडर्स एसोसिएशन के साथ अपना पहला trade outreach कार्यक्रम आयोजित किया। सीजीएसटी दिल्ली उत्तर आयुक्तालय के वरिष्ठतम

अधिकारियों ने करदाताओं से बातचीत की और उनकी समस्याओं को समझा। करदाताओं ने field offices और स्थानीय व्यवसायों के बीच विश्वास-निर्माण को बढ़ावा देने और शिकायत निवारण के लिए आयोजित इस कार्यक्रम की सराहना की। 'संवाद' के सफल आयोजन के बाद, divisional offices ने अपने अधिकार क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। बवाना डिवीजन ने 13.02.2024 को बवाना चौंबर ऑफ इंडस्ट्रीज के साथ एक बैठक की, जिसमें विभिन्न व्यापार संघों ने भाग लिया। पुरानी दिल्ली डिवीजन ने अपने अधिकार क्षेत्र में स्थित चांदनी चौक के दिल्ली हिंदुस्तानी मर्केंटाइल एसोसिएशन, चावड़ी बाजार के पेपर मर्चेंट्स एसोसिएशन और खारी बावली में किराना कमेटी के साथ स्थानीय outreach कार्यक्रम आयोजित किए। मर्केंटाइल बुलेटिन नामक एक पत्रिका ने सीजीएसटी अधिकारियों के दौरे पर एक सकारात्मक नोट प्रकाशित किया। 'संवाद' के संचालन के दौरान, करदाताओं की कई समस्याओं का तत्काल समाधान किया गया। कर अधिकारियों के साथ सीधे संवाद से सरकार में व्यापार समुदाय का विश्वास सुदृढ़ हुआ है। इस कार्यक्रम से अधिकारियों को भी स्थानीय अर्थव्यवस्था की जटिलता को समझने में मदद मिली है, जिसके परिणामस्वरूप नीति कार्यान्वयन के प्रति उनके दृष्टिकोण में नई परिपक्वता आई हैं। 'संवाद' ने कराधान अधिकारियों के व्यापार संघों, व्यवसायों और संबद्ध हितधारकों के साथ निरंतर संवाद के तौर-तरीकों को पुर्नपरिभाषित किया है।

करदाताओं के साथ संबंधों को पुनर्स्थापित करने के प्रयास में अन्य डिवीजनों ने दिल्ली उत्तर में विभिन्न outreach कार्यक्रम आयोजित किए।

- नरेला, बादली और दरियागंज डिवीजनों ने करदाताओं को जीएसटी में नीति संबंधी मामलों के बारे में जागरूक करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए।

- मॉडल टाउन डिवीजन ने सदर बाजार के व्यापार संघ की भागीदारी के साथ राजस्व वृद्धि के

लिए कार्यक्रम आयोजित किया।

- कमला नगर डिवीजन ने लॉरेंस रोड औद्योगिक क्षेत्र में करदाताओं के साथ बातचीत की।

- करोल बाग डिवीजन ने रत्न और आभूषण संघों के सदस्यों के साथ बैठक की।

- पुरानी दिल्ली डिवीजन ने ऑटोमोटिव पार्ट्स मर्चेंट एसोसिएशन, कश्मीरी गेट के साथ बातचीत की।

'संवाद' तकनीकी और कानूनी मुद्दों पर चर्चा के लिए एक मंच के रूप में भी उभरा है, उदाहरण के लिए, इनपुट टैक्स क्रेडिट का लाभ उठाना, रिफंड निस्तारण में देरी, ई-इनवॉइसिंग पर स्पष्टीकरण, पंजीकरण से संबंधित सुविधा उपाय, ई-वे बिल अनुपालन मानदंड, रिटर्न फाइलिंग में आम गलतियाँ आदि। सीजीएसटी दिल्ली उत्तर के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा India sme forum और travel agents association of india के साथ क्षेत्र-विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित किए गए। जीएसटी पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के प्रभाव के बारे में कर अधिकारियों को जागरूक करने के लिए एक विशेष सत्र भी आयोजित किया। 'संवाद' ने करदाताओं के साथ सार्थक संबंध सुनिश्चित करने के लिए रेंज अधिकारियों की क्षमता-निर्माण की दिशा में काम किया है जिससे व्यापार-सुगमता की सुविधा (ease of doing business) प्रदान होती है और स्वैच्छिक अनुपालन को प्रोत्साहन मिलता है।

'संवाद' का उद्देश्य विभिन्न हितधारकों के बीच खुले और निरंतर संवाद के लिए एक मंच प्रदान करके करदाताओं और सरकार के बीच विश्वास-आधारित संबंध बनाना है। आयुक्तालय और डिवीजनों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप ठोस नतीजे सामने आए हैं, जैसे बेहतर स्व-नियमन, कानून और नीति के संबंध में अधिक जागरूकता और स्पष्टता, प्रभावी शिकायत निवारण, क्षेत्रीय इकाइयों की वास्तविक समय पर प्रतिक्रिया और मंडल कार्यालयों के साथ जुड़ाव में वृद्धि दर्ज की गई है। DGGST ने भी दिल्ली उत्तर आयुक्तालय द्वारा आयोजित 'संवाद' की सराहना एक 'emerging best practice' के रूप में की। एक वर्ष सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद हमें विश्वास है की 'संवाद' की अभूतपूर्व पहल साझेदारी और परस्पर संवाद के माध्यम से हमारे कराधान तंत्र में एक परिवर्तनकारी बदलाव को आगे बढ़ाएगी।

भगवान की नज़र में सभी प्राणी सामान हैं

– जगमोहन पंवार, सहायक आयुक्त, दिल्ली दक्षिण (सेवानिवृत)

(1) दर्शन शब्द के दो अर्थ होते हैं (क) आँख से देखना (ख) दूसरा अर्थ होता है 'Philosphy' अर्थात किसी धारणा या मान्यता के पीछे का वास्तविक ज्ञान।

(2) भगवान किसको कहते हैं। भगवान् के बारे में हमें बताया जाता है कि:–

1. भगवान् ने संसार का निर्माण किया है।
2. भगवान ही संसार का संचालन करता है। संसार को चलाता है।
3. भगवान कण–कण में व्याप्त है।
4. भगवान की नज़र में सब (प्राणी) सामान हैं।
5. भगवान की मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता।
6. भगवान हमारी तकदीर लिखता है। हमारी तकदीर का मालिक है।

हमें यह आभास दिया जाता है कि भगवान एक सर्वशक्तिमान ईश्वर या कोई आलौकिक दैवीय शक्ति है। जबकि भगवान का वास्तविक अर्थ इस प्रकार है:

अक्सर हम यह सुनते हैं कि इस संसार में ये पांच तत्व हैं:– 1. पृथ्वी, 2. आकाश 3. जल 4. वायु 5. सूर्य (अग्नि)।

यहाँ पर भगवान की धारणा को समझने मात्र हेतु ये पाँचों लिए गए हैं। यदि गौर से देखा जाये तो भगवान शब्द एक Abriviation है। अर्थात कई शब्दों को एक संक्षिप्त रूप में लिखा गया शब्द। जैसे – NCC-National Cadet Coprs इसी प्रकार भगवान शब्द भी एक संक्षिप्त है। जिसकी व्यख्या इस प्रकार है–

भगवान =भ +ग +व+अ+न

अर्थात भूमि, गगन, वायु, अग्नि, नीर

माननीय बुद्ध सिंह प्रेमी जी ने 'प्रेमी जी की लड़ियाँ' नामक अति छोटी पुस्तिका में बहुत सहज प्रकार से भगवान शब्द की बड़ी ही ज्ञानवान काव्यात्मक व्याख्या इस प्रकार की है:–

भ: भूमि से ग : गगन से, वायु से लिया व।
अग्नि से अ को लिया, नीर से लिया न,
इन्हीं पांचो को जोड़ा।
बना दिया भगवान, तत्व कोई न छोड़ा।
कह 'प्रेमी' कविराय, गुनी जन गाते आये।
इन पाँचों तत्वों से अलग, कोई भगवान बताये।।

स्पष्ट है कि भगवान शब्द भूमि, गगन, वायु, अग्नि और नीर इन पांच प्राकृतिक तत्वों का संक्षिप्त में बनाया गया एक शब्द है। और कुछ नहीं। अर्थात यह प्रकृति ही भगवान है।

जैसे सोना और पीतल दोनों धातु हैं। दिखने में भी एक जैसी 'पीली'। परन्तु दोनों को पहचानने के लिए उनके गुणों को परखा जाता है जैसे घनत्व, पिघलने का तापमान और मिश्रण अर्थात Composition इत्यादि।

भगवान शब्द का शाब्दिक तर्क तो पूरा हो गया। परन्तु सत्यता जांची, जाये कि क्या प्रकृति वह सब काम करती है जो ऊपर बताए गए हैं कि भगवान करता है। उत्तर हैं 'हाँ '।

1. संसार का निर्माण:– तथागत गौतम बुद्ध इस सिद्धांत को प्रतिपादित करते हैं कि संसार का 'निर्माण' नहीं अपितु 'विकास' हुआ है। क्रमिक विकास से ही संसार का यह वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ है।

आज विज्ञानं ने जीवों की उत्पत्ति की व्यख्या इस प्रकार की है:–

पानी में पहले काई उत्पन्न हुई, फिर एक कोशिका जीव 'अमीबा' अमीबा के बाद बहु कोशिका जीव, फिर अरीढ़ धरी जीव, फिर रीढधारी जीव, इत्यादि, इत्यादि। इस प्रकार प्राणी जगत का विकास हुआ। इसी प्रकार मानव का वर्तमान स्वरूप बन्दर प्रजाति का विकसित रूप बताया जाता है। यह सारा निर्माण और विकास कुदरत का ही किया धरा है। यह सब प्रद्धति की खगोलीय घटनाओं का ही परिणाम है। यदि किसी ईश्वर ने यह बनाया होता तो यह शुरू से एक जैसा ही होता। जबकि सब जानते हैं कि ऐसा नहीं है।

2. संचालन कर्ता:– यह प्रकृति ही संसार को अपनी क्रियाओं द्वारा चलाती है। आइये जानते हैं कैसे:–

जब सूर्य निकलता है तो उसकी किरण समुद्र पर पड़ती हैं जिससे समुद्र के पानी का वाष्पीकरण (भाप का बनना) होता है। सूर्य और समुद्र के बीच वायु होती है। वायु का यह गुण है कि गर्म हो कर हल्की हो जाती है और ऊपर उठ जाती है। इस ऊपर उठी वायु का स्थान लेने के लिए ठंडी वायु आ जाती है। इस प्रकार वायु में गति उत्पन्न हो जाती है। वायु के गतिमान् होने का यही सीधा–सा कारण है।

सूर्य की गर्मी से गर्म हुई वायु जब ऊपर उठती है तो अपने साथ समुद्र से उत्पन्न भाप को भी ले कर उड़ जाती है। यही भाप ऊपर जाकर बादल बन जाती है। ये बादल जब पृथ्वी पर वर्षा बन कर बरसते हैं तो पृथ्वी के अपने भौतिक और रासायनिक गुणों के कारण पृथ्वी पर वनस्पति उत्पन्न होती है।

आज यह सर्वविदित है कि पृथ्वी एक गोला है और यह सूर्य के गिर्द घूमती है। साथ ही अपनी धुरी पर भी घूमती रहती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 24 घंटे में पूरा घूम जाती है। इस 24 घंटे में जो भाग सूर्य की ओर होता है वहां दिन होता है और पृथ्वी के जिस आधे भाग में सूर्य की किरणें नहीं पहुँचती वहां रात होती है। इस प्रकार दिन–रात किसी भगवान द्वारा निर्मित नहीं

अपितु पृथ्वी और सूर्य की अपनी खगोलीय चक्र का परिणाम है।

इसी चक्र के परिणाम स्वरूप ऋतुओं का आगमन और निर्गमन होता है। दिन-रात का और ऋतु चक्र का मानव जीवन पर सीधा असर पड़ता है। जैसे सर्दी के मौसम में हीटर, गीजर, रजाई, ऊनी वस्त्र इत्यादि के कारोबार खूब चल निकलते हैं तथा पंखें, कूलर, ए.सी., बर्फ, इत्यादि के कारोबार मंदे पड़ जाते हैं। गर्मी के मौसम में यह क्रम उलट जाता है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में रेन कोट और छतरियों का व्यवसाय खूब चलता है।

इसी प्रकार यह प्रकृति ही हमारे हमारे जीवन को संचालित करती है। सर्दी में हमें गर्म कपड़े खरीदने एवं पहनने पर मजबूर होना पड़ता है और गर्मियों में हमें दूसरी तरह के कपड़े पहनने पड़ते हैं। उचित मात्रा में वर्षा होने से अच्छी फसल उत्पन्न होती है जिससे सब लोगों के कारोबार में वृद्धि होती है। इसके विपरीत सूखे व बाढ़ इत्यादि की स्थिति में सभी को बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः मानव जीवन को संचालित-प्रभावित करने वाले ये खगोलीय घटना क्रम ही हैं न कि किसी ईश्वर की देन।

3. कण-कण में व्याप्तः- यह प्रकृति ही है जो सर्व विधमान हैं। सर्वव्यापी है। कोई बताए कि यह कहाँ नहीं है। यदि दयालु-कृपालु ईश्वर कण-कण में व्याप्त होता तो यह हर जीव जंतु और इंसानों में भी होता। यदि वास्तव में ऐसा होता तो एक जीव दुसरे जीव को न मारता। हत्या, ठगी, बलात्कार न करता।

4. इसकी नज़र में सब समानः- यह प्रकृति ही है जिसके समक्ष सब समान हैं। हिन्दू-मुसलमान, ब्राहमण-शूद्र, महापापी-महाधार्मिक सभी को यह पृथ्वी एक समान रूप से चलने, रहने की अनुमती देती है। वायु सभी में एक समान रूप से सांसों को आक्सीजन देती है। पानी एक समान रूप से सभी की प्यास बुझाता है। धूप एक समान रूप से गर्मियों में चुभन और सर्दियों में एक सामान रूप से सुकून देती है। इसी प्रकार छाया भी सभी पर एक जैसा प्रभाव डालती है।

5. मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं हिलताः- यह हवा ही तो है जो अपनी गति के अनुसार पत्तों को धीरे या तेज हिलाती है। यदि दूसरे (गूढ़) अर्थों में अभी देखें तो ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि मानवीय जीवन को प्रकृति पूर्ण रूप से निर्धारित और संचालित करती हैं।

6. इंसानी तकदीर का मालिकः- तथागत गौतम ने बताया कि इस संसार के दो ही कर्ता हैं। प्रकृति और इंसान। इंसान के सम्पूर्ण जीवन भूत-वर्तमान-भविष्य पर प्रकृति का तो प्रभाव रहता ही है, साथ ही उसके अपने कर्मों का भी उसके जीवन पर पूरा प्रभाव रहता है। जैसे कुदरत ने सभी को एक समान हाथ-पांव, आँख-नाक-कान, बुधि इत्यादि दिए हैं। सभी के लिए दिन भी 24 घंटे का होता है। परन्तु इन सभी के बावजूद कोई व्यक्ति इन 24 घंटों के समयकाल का और अपने हाथ-पांव-बुधि का इस्तेमाल उचित तरह से करता है,

अपनी पढाई-लिखाई, व्यवसाय या अन्य उचित कार्यों में करता है तो वह अत्यंत सुख पाता है। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति इस 24 घंटे के समय काल का अपने हाथ-पाँव-बुधि का इस्तेमाल आवारगर्दी, व्यर्थ के घूमने-फिरने में या अनुचित कार्यों में करता है तो उसे अत्यंत दु:ख भोगना पड़ता है। अत: हमरी तकदीर का विधाता कोई ईश्वर नहीं अपितु प्रमुख रूप से हम स्वयं ही हैं।

भगवान को आज तक कोई जान सका-कोई नहीं देख पाया:- यदि हम किसी चीज़ की मनघडंत या गलत व्याख्या करेंगे तो कोई कैसे जानेगा-समझेगा? अब यह स्पष्ट है कि भगवान को प्रकृति के रूप में सब देख व समझ सकते हैं। परन्तु यदि हम भगवान को काल्पनिक ईश्वर के स्वरूप में प्रचारित करें तो कोई भला कैसे जान सकता है और कैसे देख सकता है? क्योंकि ऐसी कोई चीज़ होती ही नहीं। जैसे यदि कहा जाय कि घोड़े का अंडा किस रंग का होता है और कितने किलो का होता है तो इस बात का भला कोई क्या उत्तर देगा। क्योंकि घोड़े का अंडा तो होता ही नहीं हैं।

अत: भगवान केवल प्रकृति स्वरूप ही होता है। प्रकृति ही भगवान है। प्रकृति के रूप में भगवान का 10/2=5 जैसा साधारण सा सवाल है। परन्तु ईश्वर वादी इस व्यवस्था पर अपने रहस्यवाद को बनाये रखने के लिए दलील देते हैं कि आखिर प्रकृति को चलाने वाला कोई तो होगा। वही तो ईश्वर है। यहाँ ये भूल जाते हैं कि यदि इस तर्क को मान लिया जाये तो यह सवाल भी उठेगा कि उस प्रकृति के चलाने वाले ईश्वर का निर्माण और संचालन करने वाला भी कोई अवश्य होने चाहिए। इस प्रकार उस निर्माण और संचालनकर्ता का भी कोई और भी संचालनकर्ता होगा।

इस प्रकार एक स्पष्ट सत्य को ही अपनी कल्पना की मिलावट से उलझा कर जटिल बना दी जाती है। इस प्रकार 10/2=5 के साधारण से सवाल को 10/3=3.3333..... को कभी न ख़त्म होने वाला सवाल बना दिया गया। सवाल उठता है कि ऐसा क्यों किया। उत्तर स्पष्ट है यदि जटिलता न खड़ी की गई, ईश्वर के नाम पर डर व लालच की धारणा न खड़ी की गयी , रहस्यवाद न खड़ा किया गया तो ईश्वर के नाम पर धंधा कैसे किया जा सकेगा?

तो स्पष्ट है कि प्रकृति ही भगवान है और भगवान ही प्रकृति है। यह प्रकृति कोई अभिशाप या वरदान नहीं देती अत: इससे डरने का कोई कारण नहीं है। इस संसार में हमें अपने कर्मों के अनुसार ही सुख व दु:ख मिलता है। यही है बुद्ध का ज्ञान।

पैरा स्पोर्ट्स और मैं

– राम सरन सिंह, सहायक निदेशक, (राजभाषा)

अपने व्यावसायिक और पारिवारिक कर्तव्यों के साथ-साथ अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना प्रत्येक व्यक्ति की प्राथमिकता होती है और होनी भी चाहिए। वैसे प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियां अलग-अलग होती हैं परंतु उद्देश्य एक ही होना चाहिए कि वह इन तीनों के बीच में सामंजस्य बनाकर अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करें। व्यक्ति की परिस्थितियां कैसे भी हो प्रकृति द्वारा उसे समान रूप से चुनौतियां दी जाती है। प्रकृति द्वारा दी गई चुनौतियों को कुछ लोग स्वीकार करके निखर जाते हैं वहीं पर कुछ लोग इन चुनौतियों का सामना न करने के कारण बिखर जाते हैं।

मुझे बताया गया कि जब मैं 6 माह का था तब पोलियो के कारण मेरे दोनों पैरों में विकृति आ गई थी। माता-पिता द्वारा अपना सर्वोत्तम प्रयास करने के बावजूद भी मेरी स्थिति में बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया था। मैं सौभाग्यशाली था कि स्कूल के समय में अपने सहयोगियों के सहयोग के कारण मुझे कभी भी अपनी इस स्थिति का आभास नहीं हुआ और ऐसी स्थिति विश्वविद्यालय मैं अध्ययन के दौरान भी रही। प्रत्येक व्यक्ति की तरह मेरा भी सपना था कि मैं समाज में सम्मानजनक जीवन व्यतीत करते हुए अपनी क्षमता अनुसार समाज की भलाई के लिए भी कार्य करता रहूं।

अपनी विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद मैंने विभिन्न व्यावसायिक विकल्पों पर विचार किया और मैं सौभाग्यशाली था कि मुझे एक अच्छे मार्गदर्शक मिले जिन्होंने मुझे शासकीय सेवा में जाने के लिए प्रेरित किया। मेरी व्यक्तिगत और शारीरिक स्थिति को देखते हुए यह उस समय एक उत्तम विकल्प था। जब मैंने संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी शुरू की तब मेरा और इस

वर्ष 2016 एयरटेल मैराथन में भाग लेते हुए

राष्ट्रीय स्वाभिमान खेल परिसर में सदस्यों की क्रिकेट टीम

वर्ष 2017 बिलियर्ड एवं स्नूकर प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

सेवा दोनों का कठिन टाइम चल रहा था। यह समय था 1998 से 2005 तक का समय जब इस सेवा में रिक्तियां और मेरी तैयारी दोनों ही कम थी। सौभाग्य से वर्ष 2005 में मेरा कर्मचारी चयन आयोग की एक सम्मानजनक पद पर मेरा चयन हो गया और मैंने सीमा शुल्क मुंबई में अपना पदभार ग्रहण किया। अभी सिविल सेवा के लिए मेरी क्षमता और प्रयास दोनों ही शेष थे इसलिए मैंने वापस दिल्ली जाकर के इस संबंध में आगे तैयारी करने का निर्णय लिया।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जिन लोगों को सफलता बहुत जल्दी मिल जाती है उनको सभी याद करते हैं जैसे क्रिकेट के क्षेत्र में सचिन तेंदुलकर को मात्र 17 साल के आयु में भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, परंतु बहुत कम लोग ही जानते हैं कि प्रवीण तांबे नाम के एक क्रिकेटर जो मुंबई से ही आते हैं, इनको 41 साल की आयु में आईपीएल में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी प्रकार वर्ष 2011 और 2012 और उसके बाद में वर्ष 2015 में अपने अंतिम प्रयास और 40 साल की आयु में सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में मात्र पांच नंबर से मेरा चयन नहीं हो पाया।

''संघर्ष नहीं जिनके जीवन में वह भी बड़े अभागें होंगे या तो प्राण को तोड़ा होगा या तो रण से भागें होंगे'' कहने की आवश्यकता नहीं है कि अपनी शासकीय दायित्वों और पारिवारिक जिम्मेदारियां के साथ-साथ सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के कारण मेरा स्वास्थ्य बहुत अधिक प्रभावित हुआ और अब मेरे पास एक मात्र विकल्प था कि मुझे अपने स्वास्थ्य को ठीक करने का प्रयास करना चाहिए। सौभाग्यवश मैं वर्ष 2011 से ही राष्ट्रीय स्वाभिमान खेल परिसर एवं स्पोर्ट्स कंपलेक्स पीतमपुरा का सदस्य बन गया था। कहा जाता है जैसी संगत वैसी रंगत, जी हां मुझे यहां ऐसे लोगों की संगत मिली जो विभिन्न मैराथन गतिविधियों में भाग लेते थे और और उन्होंने मुझे भी इस मैराथन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 2016 में मैं आईडीबीआई और एयरटेल मैराथन में 5 किलोमीटर की मैराथन प्रतियोगिता में भाग लिया और सौभाग्यवश यहां मुझे सचिन तेंदुलकर से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। 3 साल तक विभिन्न मैराथन गतिविधियों में भाग लेने के बाद मेरे स्वास्थ्य में कुछ सुधार हुआ और मेरा वजन भी

वर्ष 2023 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता में
वित्त मंत्रालय टीम के कप्तान श्री जगमोहन पंवार के साथ यादगार चित्र

वर्ष 2023 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता के अंतर्गत
वाटर पोलो प्रतियोगिता के उपविजेता शील्ड के साथ यादगार चित्र

वर्ष 2023 में अंतर मंत्रालय प्रतियोगिता में भाग
लेने वाली वित्त मंत्रालय की टीम का चित्र

कम हुआ परंतु इसी दौरान मेरे घुटने में चोट लग गई और अब मैं 100 मीटर चलने में भी तकलीफ महसूस करने लगा। इस परिस्थिति में भी मुझे अपने शासकीय दायित्व और पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने का कार्य करना था। अब फिर से मेरे सामने अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी थी। चिकित्सकों ने मुझे अधिक चलने से मना कर दिया। मेरे सामने एक ही विकल्प था कि मैं अपनी शारीरिक गतिविधियों को सीमित करके अपना जीवन यापन करते हुए अपनी जिम्मेदारियां को निभाता रहूं, परंतु समस्या यह थी कि मैं सम्मानजनक जिंदगी जीना चाहता था मैं किसी पर बोझ बनना या किसी का आश्रय नहीं लेना चाहता था।

अब तक का मेरा अनुभव था कि ना तो प्रकृति आपकी चुनौतियों को कम करती है और ना समाज ही आपकी जिम्मेदारियां को कम करता है। मैंने भी होश संभालते ही अपनी शारीरिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह ठान लिया था कि मैं किसी भी स्थिति में किसी की दया का पात्र नहीं बनूँगा। यह सोचकर मुझे रातों में नींद नहीं आती थी अब तक का तो जीवन मैंने संघर्ष करने में लगा दिया और अब जब कुछ अच्छा समय आया है जब मैं अपनी सुविधा अनुसार घूम सकता था और अपनी इच्छा अनुसार विभिन्न प्रकार के व्यंजन खाने में समर्थ था तब मेरी शारीरिक समस्या इस दिशा में बाधा बन गई थी।

इसी दौरान मैंने बाज के जीवन के बारे में पढ़ा कि किस प्रकार बाज अपनी आधी आयु हो जाने के उपरांत अपने भारी पंखों और मुड़ी हुई चोंच के कारण उसका जीवन समाप्ति के कगार पर पहुंच जाता है और तब बाज दूर किसी पहाड़ पर जाकर पहाड़ से टकरा-टकरा कर अपने पंख तोड़ देता है अपनी चोंच तोड़ देता है और इंतजार करता है कि उसके नए पंख आए और नई चोंच आने का इंतजार करता है। यह प्रक्रिया बहुत पीड़ा दायक होती है परंतु यही प्रक्रिया बाज को एक नया जीवन देती है और बाज फिर शेष आयु सम्मानजनक तरीके से व्यतीत करता है। इस कहानी ने मुझे बेचैन कर दिया और अब मैं इस विकल्प पर विचार करने लगा कि कोई न कोई ऐसा तरीका होगा जिससे कि मैं अपने स्वास्थ्य को बाज की तरह पुनर्निर्मित कर सकूं। विभिन्न विकल्पों पर विचार करते हुए मुझे अचानक मेरे

वर्ष 2024 में दिल्ली पैरा तैराकी संघ और भारतीय पैरा ओलंपिक समिति द्वारा आयोजित दिल्ली राज्य चैंपियनशिप में श्री रणवीर शर्मा, राष्ट्रीय कोच और अन्य मुख्य और विशिष्ट अतिथियों से मेडल और प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए।

साथियों ने तैराकी का विकल्प दिया। मैंने सोचा विकल्प तो अच्छा है परंतु तैरना तो दूर मैं तो पानी में ठीक से खड़ा भी नहीं हो सकता हूं फिर मैं तैराकी कैसे कर पाऊंगा। जब मैं इस विकल्प पर कुछ अन्य लोगों से चर्चा की तो उन्होंने मुझे बताया की शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति भी पानी में डूब जाता है तो आपके लिए यह विकल्प बहुत ही ज्यादा खतरनाक साबित हो सकता है तैराकी के दौरान आपका जीवन भी खतरे में पड़ सकता है। मेरा जीवन तो वैसे भी खतरे में पड़ चुका था इस तरह से मेरी शारीरिक गतिविधियां सीमित होती जा रही थी उस स्थिति में अब बस मेरी दवाइयां चालू होने वाली थी। इस स्थिति में बीपी और शुगर यह दो चीज मुझे तोह्फे में मिलने वाली थी।

तब मुझे किसी ने यह चंद लाइन सुनाई और मैं लीक से हटकर सोचने लगा

कुछ लोग तुम्हें समझाएंगे
वह आकर खौफ दिलाएंगे
जो है वह भी खो सकता है
इस राह में मुश्किल है इतनी
कि यहां कुछ भी हो सकता है
(तब मैंने अपने आप को समझाया)
कुछ और तो अक्सर होता है
पर तुम जिस लम्हे में जिंदा हो
वह लम्हा तुमसे जिंदा है
यह वक्त नहीं फिर आएगा
तुम अपनी करनी कर गुजरो
जो होगा देखा जाएगा ।

और इस प्रकार में उपरोक्त लाइनों से प्रेरित होकर के मैंने जीवन में यह जोखिम लेने का फैसला किया मैं वर्ष 2023 मैं तरण ताल में तैराकी के लिए गया। वैसे तो स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में तैराकी की सुविधा वर्ष 2011 में मेरी सदस्यता ग्रहण करने पर उपलब्ध थी परंतु इस तरफ मैंने कभी ध्यान ही नहीं दिया था। मैं तैराकी करने गया और मैंने लाइफ जैकेट और प्लास्टिक की रिंग का सहारा लेते हुए पानी में उतर गया। मैं सौभाग्यशाली था कि उस वर्ष के लाइफगार्ड बहुत अच्छे थे और इसी समय वहां पर स्विमिंग करने वाले मेरे मित्र भी मौजूद थे जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया। मात्र 3 महीने में मैं थोड़ी-थोड़ी तैराकी सीख गया और पानी

वर्ष 2024 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता में डीओपीटी के वरिष्ठ अधिकारी से सिल्वर मेडल प्राप्त करते हुए।

वर्ष 2024 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता में वित्त मंत्रालय की टीम के साथ उपविजेता शील्ड प्राप्त करते हुए यादगार चित्र।

वर्ष 2024 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए यादगार चित्र।

में डूबने का डर अब नहीं रहा। तैराकी करते समय मेरे जहन में बाज की कहानी निरंतर मुझे प्रेरणा देती रही और मैं सुबह और शाम तैराकी करने लगा। मात्र 5 महीने में मैंने अपना 4 किलो वजन कम कर लिया और मैं शारीरिक रूप से स्वस्थ महसूस करने लगा। मेरे अंदर फिर नयी ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ। मैंने कार्यालय के सहयोगियों को भी अपनी तैराकी के बारे में बताया, तब उनमें से मुझे कुछ लोगों ने सूचित किया कि अगस्त 2023 में डीओपीटी द्वारा अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है और मैं वित्त मंत्रालय की तरफ से इसमें भाग ले सकता हूं। इस सूचना ने मुझे बहुत अधिक उत्साहित किया और अब मेरे पास एक लक्ष्य था उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मैं दिन रात मेहनत करनी शुरू कर दी। मेरी मेहनत रंग लाई और मैं 19 अगस्त 2023 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी तरण ताल जिसे तालकटोरा के नाम से भी जाना जाता है अंतर मंत्रालय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहुंच गया। इस प्रतियोगिता में जाकर मुझे पता लगा कि मुझे सामान्य लोगों के साथ प्रतियोगिता करनी होगी। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं था, परंतु अपनी पहचान बनाने का एक छोटा सा अवसर मेरे सामने था।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्वाभिमान खेल परिसर का तरणताल केवल साढ़े चार फीट गहरा था और तालकटोरा का तरणताल 7 फीट गहरा था। तरण ताल की गहराई का अंतर बहुत ज्यादा था लेकिन यह मेरे हौसलों से ज्यादा नहीं था। 50मी और 100 मीटर फ्री स्टाइल में भाग लिया। मैं बहुत मुश्किल से ही अपनी प्रतियोगिता पूर्ण कर पाया था लेकिन इस दौरान सभी ने मेरा हौसला बढ़ाया। व्यक्तिगत प्रतियोगिताएं पूर्ण हो जाने के बाद में वाटर पोलो की प्रतियोगिता के लिए टीम का चयन प्रारंभ हुआ। वित्त मंत्रालय के टीम के कप्तान श्री जगमोहन पंवार ने मेरे प्रयासों को ध्यान में रखते हुए मुझे वाटर पोलो टीम का हिस्सा बनाने का निर्णय लिया और मैंने भी खुशी-खुशी सहमति प्रदान कर दी। जिस तरण ताल में वाटर पोलो का मैच होना था वह तरण ताल लगभग 15 फीट गहरा था यह मेरे लिए एक और बड़ी चुनौती थी। इस तरण ताल में प्रतियोगिता के दौरान कुछ क्षण बिताना भी बहुत मुश्किल लग रहा था। ऐसी

वर्ष 2024 में अंतर मंत्रालय तैराकी प्रतियोगिता मैं सिल्वर मेडल जीतने के उपरांत श्री शौकत अली नूरवी, अपर आयुक्त, श्री मनीष मोहन गोविल, प्रधान आयुक्त दिल्ली उत्तर का आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए। मैं और मेरे सहयोगी श्री अशोक कुमार वर्मा, कार्यकारी सहायक (बाए से दाएं)

श्री आलोक झा, प्रधान आयुक्त, मानव संसाधन एवं विकास महानिदेशालय का आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए यादगार पल।

सुश्री सुरक्षा कटियार, आयुक्त लेखा परीक्षा-II का आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन प्राप्त करते हुए यादगार पल।

स्थिति में मेरी टीम और वहां पर उपस्थित सभी लोगों ने मेरा उत्साह बढ़ाया और मैं प्रतियोगिता के सेकंड हाफ में तरण ताल में उतरकर के अपनी टीम का योगदान दिया। वाटर पोलो प्रतियोगिता में हमारी टीम रेलवे के बाद द्वितीय स्थान पर रही और हमको सिल्वर मेडल प्राप्त हुआ।

जैसा कि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है कि ''है कौन विघ्न ऐसा जग में टिक सके वीर नर के मग में मानव जब जोर लगाता है पत्थर पानी बन जाता है।''

जी हां आज मेरे लिए पत्थर पानी हो गया था, अब पानी से मेरी दोस्ती हो गई थी और पानी ने मुझे अपना लिया था। इस प्रतियोगिता के दौरान सबसे अच्छी बात यह रही कि मैं ताल कटोरा स्विमिंग पूल से परिचित हो गया और अगले ही दिन मैं यहां की सदस्यता ग्रहण कर ली। मुझे यह बताया गया कि नियम अनुसार जो व्यक्ति 100 मी बिना रुके तैराकी का टेस्ट पास कर लेगा उसी का ही पास बनेगा। मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि मैं मात्र ₹100 में पूरे साल यहां पर आकर तैराकी कर सकता हूं। इस तरण ताल की मुख्य विशेषता यह थी कि आप सर्दियों में भी यहां पर आकर तैराकी कर सकते हैं क्योंकि यहां पर तापमान को नियंत्रित करने की सुविधा है।

तालकटोरा स्टेडियम का पास बनवाने के बाद मेरे जीवन को एक नया लक्ष्य और एक नई रोशनी प्राप्त हुई। यहां मैं ऐसे ऐसे लोगों से मिला, जिनके दोनों पैर नहीं चलते थे और वह पूर्णता व्हीलचेयर पर अपना जीवन यापन कर रहे थे। कुछ लोगों के दोनों हाथ नहीं थे और कुछ लोग देख नहीं पाते थे। परंतु इन सभी ने अपने जीवन से हार नहीं मानी और संघर्ष करने का निर्णय लिया। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह सभी लोग मुझसे बहुत अच्छी तैराकी करते हैं। मुझे यहां पर पता लगा कि श्री वीरेंद्र डबास और श्री रणवीर शर्मा सर भारतीय पैरा तैराकी के सीनियर और जूनियर कोच

श्री रणवीर शर्मा राष्ट्रीय पैरा तैराकी कोच एवं माननीय अनुराग ठाकुर,भूतपूर्व केंद्रीय, खेल मंत्री भारत सरकार के साथ श्री हिमांशु नंदलाल अंतरराष्ट्रीय पैरा तैराक एवं अन्य राष्ट्रीय कोच। (बाय से दाएं)

श्री विश्वास के. सी अंतरराष्ट्रीय पैरा तैराक

दोनों पैर नहीं लेकिन हौंसला इतना की सहीराम मेघवाल ने जीता नेशनल पैरा तैराकी में गोल्ड मेडल

सहीराम की उपलब्धियां

- 2021, राज्य स्तरीय 3 गोल्ड मेडल नेशनल लेवल 1 ब्रॉन्ज मेडल
- 2022 राज्य स्तरीय 3 गोल्ड और नेशनल लेवल 1 सिल्वर मेडल
- 2023 राज्य स्तरीय 3 गोल्ड और नेशनल लेवल 1 सिल्वर 1 ब्रॉन्ज मेडल
- 2024 राज्य स्तरीय 3 गोल्ड और नेशनल लेवल 1 गोल्ड मेडल 1 ब्रॉन्ज मेडल

श्री रणवीर शर्मा राष्ट्रीय पैरा तैराकी कोच,
श्री देवेंद्र सिंह, अध्यक्ष पैरा कमेटी ऑफ़ इंडिया एवं श्री वीरेंद्र डबास,
राष्ट्रीय पैरा तैराकी कोच। (बाय से दाएं)

है। श्री वीरेंद्र डबास और श्री रणवीर शर्मा सर दिव्यांग तैराको के लिए किसी देवदूत से कम नहीं है। यदि भारत में श्री वीरेंद्र डबास को पैरा तैराकी का भीष्म पितामह कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी और श्री रणवीर शर्मा श्री वीरेंद्र डबास सर के पदचिन्हो पर चलकर इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। मुझे श्री रणवीर शर्मा जी ने वीरेंद्र डबास सर से मिलवाया और मुझे भारतीय पैरा तैराकी ग्रुप में शामिल कर लिया। वर्ष 2023 और वर्ष 2024 में होने वाली राष्ट्रीय पैरा तैराकी चैंपियनशिप की चयन के दौरान मैंने अपनी श्रेणी में दिल्ली राज्य में 50 मी और 100 मी फीस्टाइल में गोल्ड मेडल और बैक स्ट्रोक में सिल्वर मेडल प्राप्त किया।

राष्ट्रीय स्वाभिमान खेल परिसर में अपने अभ्यास के दौरान मैंने वर्ष 2023और 2024 में विभिन्न आयु वर्ग के 50 से अधिक लोगों को तैराकी सीखने में सहयोग किया। मुझे बहुत ज्यादा प्रसन्नता तब हुई जब मैं अपनी पत्नी, पुत्र और पुत्री को तैराकी सिखायी और अब मेरा पूरा परिवार तैराकी करता है।

"जिस स्थिति में लोग मरने की दुआ करते हैं उसे स्थिति में पैरा एथलीट जीने की कसम खाता है।"

जी हाँ जन्म से या दुर्घटनावश अपने शरीर के अंगों को गंवाने के उपरांत भी दिव्यांग व्यक्तियों को समाज में जीवन यापन करना पड़ता है। इनको वह सभी व्यावसायिक और पारिवारिक जिम्मेदारियां निभानी पड़ती है जो आम लोग निभाते हैं। वर्ष 2024 में पेरिस में आयोजित पैरा ओलंपिक चैंपियन में भारतीय पैरा एथलीट्न ने 29 मेडल जीतकर पूरे देश का ध्यान अपनी और आकर्षित किया।

आज मुझे यह लेख लिखते हुए गर्व और संतोष का अनुभव हो रहा है कि मैने अपने जीवन में उस बाज की कहानी को दोहराया और अपने जीवन के दूसरे अध्याय में मैं स्वस्थ, ऊर्जा पूर्ण और आनंदमय जीवन जी रहा हूं। इस अवसर पर मेरे संघर्ष में सहयोग और सहायता देने वाले सभी लोगों का मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

यात्रा संस्मरणः मेरी मणिमहेश कैलाश यात्रा

- विपुल शर्मा, अधीक्षक (सतर्कता), सी.जी.एस.टी दिल्ली उत्तर

प्रकृति मनुष्य के अंतरंग स्वभाव से जंगल की हरियाली, पेड-पौधे, ऊंचे पहाड़, झरने, समतल भूमि पर बहती बुदबुदाती हुई नदियां आदि के रूप में, प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई है। ऐतिहासिक जगहों पर जाकर इतिहास को ताजा करना, नई जगहों पर जाना और नए लोगों से मिलना, शहर की प्रदूषित हवा से बाहर निकलकर गांव की खुली हवा और साफ आसमान को छूना, बोझिल जिंदगी में एक नई ऊर्जा भर देता है। ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से मुझे घूमना-फिरना काफी पसंद है। शहरों की ऊंची-ऊंची इमारतों को देखने से बेहतर है कि अक्सर समय निकालकर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ देख लिए जाएं। कई बार पौराणिक जगहों पर जाकर बेचैन मन को शांति मिली है। मुझे अपने जीवन में ऐसी कई यात्राएं करने का अवसर मिला है।

अभी हाल ही में मुझे मणिमहेश कैलाश की अविश्वसनीय यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बहुत दिनों से मेरी इच्छा कैलाश यात्रा पर जाने की थी, लेकिन व्यस्तता और अन्य अपरिहार्य कारणों से मैं नहीं जा पाया। फिर संयोग से मैंने अपने एक पारिवारिक मित्र से जो हिमाचल से हैं। मणिमहेश यात्रा के बारे में सुना, जो कैलाश का एक हिस्सा है। इसके बारे में सुनकर और इसके दृश्यों की कल्पना कर मेरे मन में वहाँ जाने का विचार बन पड़ा। इंटरनेट पर सर्च करने पर मैंने कुछ ट्रैवलर साइट्स और उनके द्वारा दिए जा रहे पैकेज के बारे में पढ़ा। काफी जानकारी और विश्लेषण के बाद

मैंने एक पैकेज तय किया और जून के दूसरे सप्ताह में जाने का फैसला किया। पता चला कि मणिमहेश यात्रा मई से अक्टूबर तक होती है और सबसे अच्छा समय जून, अगस्त और सितंबर है। मणिमहेश में दिन और रात के तापमान में काफी अंतर देखा जाता है। दिन में तापमान 12°C – 20°C के बीच रहता है और रात में तापमान 0°C - 6°C के बीच रहता है। इसलिए ट्रैवल एजेंसी ने हमें एहतियात के तौर पर कुछ जरूरी चीजें साथ रखने की हिदायत दी, इनमें मुख्य थी गर्म कपड़े, थर्मलवियर, जैकेट, दस्ताने, टोपी, रेनकोट, टॉर्च, कुछ जरूरी खाने-पीने की चीजें, कपूर, जरूरी दवाइयां, एक छोटी प्राथमिक चिकित्सा किट, ट्रैकिंग स्टिक और अच्छी ग्रिप वाले ट्रैकिंग जूते। आपको शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए, इसमें कोई दो राय नहीं है। आम तौर पर अस्थमा और हृदय की समस्याओं वाले रोगियों को उच्च ऊंचाई पर अनुकूलन करने में समस्या होती है। ट्रैवल एजेंसी ने हमारा जरूरी मैडिकल और यंत्र पंजीकरण करवाया, जो राज्य सरकार के निर्देशानुसार इस यात्रा के लिए अति आवश्यक है।

फिर वो दिन आ गया जब यात्रा शुरू करनी थी। सभी जरूरी तैयारियों के बाद हम ट्रेन से सुबह पठानकोट पहुँचे। पठानकोट सुरम्य चंबा जिले का प्रवेश द्वार है। वहाँ हमें अपने ग्रुप के अन्य लोगों से मिलवाया गया। हमारा ग्रुप 12 लोगों का एक छोटा समूह था, जिसमें हम तीन लोग दिल्ली से थे और बाकी लोग मैसूर, जयपुर, शिमला और अहमदाबाद से आये यात्री थे। गाइड हम लोगों को टेम्पो ट्रैवेलर द्वारा हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में ले गया जो लगभग 120 किलोमीटर है। चंबा हिमाचल प्रदेश राज्य का एक प्राचीन शहर है जो रावी नदी के तट पर बसा है। हिमाचल प्रदेश के लुभावने परिदृश्यों का आनंद लेते हुए घुमावदार सड़कों के साथ हरी-भरी घाटियों और आकर्षक गांवों से होकर लगभग 5 घंटे की यात्रा के बाद हम दोपहर के आसपास चंबा पहुंचे। शहर की भीड़ से दूर.... सहज और सरल जीवन जीने वाले लोग.... जो जीवन के शेष पलों को राहत देते लगे.... हमारा प्रथम पड़ाव यही पर शुरू होता है। वहाँ हमें एक ट्री हाउस में ठहराया गया, जो मेरे जीवन का एक अलग ही अनुभव बना। हमने स्थानीय गाइड द्वारा आयोजित ब्रीफिंग सत्र

साभार: गुगल

में भाग लिया और आगामी यात्रा, ट्रैकिंग मार्गों, मौसम की स्थिति और एक यादगार और सुरक्षित यात्रा अनुभव सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सुरक्षा युक्तियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

शाम को हम चंबा चौगान, लक्ष्मी नारायण मंदिर और चामुंडा देवी मंदिर गए। वैष्णव संप्रदाय को समर्पित मंदिर परिसर में ऐतिहासिक 10वीं शताब्दी पुराना मुख्य लक्ष्मी नारायण मंदिर शामिल है। चामुंडा देवी मंदिर शाह मदार पहाड़ियों की चोटी पर एक प्रमुख स्थान पर स्थित है, जहाँ से चंबा शहर दिखाई देता है। चामुण्डा देवी मन्दिर पहुँचते-पहुँचते संध्या पड़ चुकी थी और शाम की आरती (प्रार्थना समारोह) अभी-अभी शुरू ही हुई थी। मंत्रोच्चार और अनुष्ठानों ने एक आकर्षक और आध्यात्मिक माहौल बनाया, जिससे हमें आंतरिक शांति और ज्ञान की अनुभूति हुई। कुछ देर बाहर आंगन में बैठने के बाद, हम इस अद्भुत अनुभव को अपने दिल में संजोए हुए ट्री हॉउस में लौट आए। रात भर ठहरने के बाद, हम सुबह जल्दी तैयार हो गए। एक अच्छे हिमाचली नाश्ते के बाद, हम चंबा जिले के हमारे अगले पड़ाव भरमौर (2195 मीटर) के लिए निकल पड़े। रास्ते में लाहल के पास एक जगह से शानदार, प्रकृतिबाह्य मणिमहेश कैलाश शिखर का अद्भुत नजारा दिखाई देता है, इसलिए खूबसूरत पर्वत को देखने के लिए रुकने का फैसला किया गया। वहाँ से पहली झलक पाने के बाद, मणिमहेश क्षेत्र तक पहुंचने, उसे करीब से देखने और छूने की तीव्र इच्छा के साथ हम आगे भरमौर की ओर बढ़ गए।

भरमौर, जिसे औपचारिक रूप से ब्रह्मपुरा के नाम से जाना जाता है, चंबा जिले की प्राचीन राजधानी थी और आज यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता और प्राचीन मंदिरों के लिए जाना जाता है। स्थानीय लोगों को गद्दी (स्थानीय जनजाति) के रूप में जाना जाता है, जो चुहली टोपी (नुकीली टोपी), जिसे वे आज भी अपने अन्य पारंपरिक कपड़ों, चोला (कोट) और डोरा (10-15 मीटर लंबी काली रस्सी) के साथ पहनते हैं। भरमौर मणिमहेश का प्रवेश द्वार है। इस क्षेत्र के आसपास पीरपंजाल और धौलाधार पर्वतमाला इसे एक मनोरम शहर बनाती है। मणिमहेश झील भरमौर से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

चम्बा से निकल, खूबसूरत पहाड़ियों से लगभग 3 घंटे की यात्रा करने के बाद, हम भरमौर में अपने गेस्टहाउस पहुँचे। आराम करने और दोपहर का भोजन करने के बाद, हम स्थानीय दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए निकल पड़े। सबसे पहले हम अरमाणी माता मंदिर गए, यह कुल 6 किलोमीटर का ट्रेक है, जिसमें प्रत्येक तरफ 3 किलोमीटर है और इसे पूरा करने में लगभग 6 घंटे लगे। भरमौर से 4 किलोमीटर दूर चौड और देवदार के पेड़ों से ढ़की एक पहाड़ी की चोटी पर अरमाणी माता मंदिर परिसर है। यह स्थान मुख्य रूप से देवी अरमाणी (ब्रह्माणी नाम का अपभ्रंश) माता के लिए जाना जाता है, जिन्हें देवी दुर्गा के अवतारों में से एक कहा जाता है। वहाँ के बनस्पति जीवन, अल्पाइन के पेड़ व अन्य पौधे एक दूसरे से उलझे हुए से लग रहे थे, मानो एक दूसरे की खूबियों के साथ-साथ उनकी खामियों को भी अपना रहे हो। प्रकृति में अजीब तरीकों से उलझे हुए भी वे सभी खूबसूरत लग रहे थे। प्रकृति प्रेम उद्धरण हमें सिखाते हैं कि खामियों के बावजूद एक दूसरे से कैसे प्यार किया जाए। सही कहा गया है

कि "एक कल्पनाशील व्यक्ति की नजर में, प्रकृति स्वयं कल्पना है।"

प्राकृतिक सुंदरता को निहारने और कुछ समय वहाँ रहने के बाद, हम प्रसिकृ चौरासी मंदिर परिसर के लिए निकल पड़े। चौरासी मंदिर भरमौर शहर के मध्य में स्थित है और लगभग 1400 वर्ष पहले बने 84 मंदिरों के कारण इसकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक और धार्मिक महता बहुत अधिक है। विशाल मंदिर परिसर में बहुत कम लोग थे। परिसर साफ-सुथरा था और चारों ओर बर्फीले पहाड़ों का नजारा बहुत ही मनमोहक था। मंदिर में एक घंटे से अधिक समय बिताने के बाद हम प्रवेश द्वार के पास वापस आए, एक कप चाय पी और फिर गेस्टहॉउस की ओर चल दिए। वापस आकर हमने आगे की तैयारियों शुरू कर दी। हमने ट्रेकिंग के लिए जरूरी सामान ट्रेकिंग बैग में पैक कर लिया। बाकी जो सामान जरूरी नहीं था, उसे हमने गेस्टहॉउस में ही छोड़ दिया। रात भर आराम करने के बाद, तीसरे दिन सुबह-सुबह हम टैक्सी से भरमौर से हड़सर के लिए 14 किलोमीटर की यात्रा पर निकल पड़े। हड़सर से ही मणिमहेश कैलाश ट्रेक शुरू होता है।

गाइड ने यहाँ इस आगे की यात्रा के बारे में बताते हुए कितने ही रहस्यों पर से पर्दा उठाया। मणिमहेश कैलाश, हिमालय में पाए जाने वाले पाँच अलग-अलग कैलाश पर्वतमालाओं में से एक है। इन पाँच चोटियों को भगवान शिव का निवास माना जाता है। तिब्बत में कैलाश मानसरोवर, उत्तराखंड में आदि-कैलाश और हिमाचल प्रदेश में मणिमहेश कैलाश, किन्नौर कैलाश और श्रीखंड महादेव, ये पाँच कैलाश है। पवित्र मणिमहेश कैलाश पर्वत की ऊँचाई 18,564 फीट है। अभी तक कोई भी इस पर्वत की चोटी पर नहीं चढ़ पाया है। रात्रि के चौथे प्रहर में, जिसे ब्रह्म मुहूर्त कहा जाता है, सूर्योदय से पहले शिखर पर प्रकाश की एक मणि चमकती है। इसकी चमक इतनी अधिक होती है कि इसकी रोशनी दूर-दूर तक दिखाई देती है। आश्चर्यजनक बात यह है कि मणि के चमकने के काफी समय बाद सूर्योदय होता है। हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले की मशहूर मणिमहेश की यात्रा बहुत कठिन मानी जाती है। इसे इस क्षेत्र में सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण ट्रैक में से एक माना जाता है। यह ट्रैक यात्रियों को हिमालय की पीर पंजाल श्रृंखला में 4,080 मीटर की ऊँचाई पर स्थित पवित्र मणिमहेश झील तक ले जाता है। यहाँ ट्रैक करने के लिए यात्रियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए। मणिमहेश यात्रा अपनी प्रातिक सुंदरता और खूबसूरत नज़ारों के लिए भी जानी जाती है।

हमने अपने ट्रेकिंग बूट पहने और अपने ट्रैक के पहले चरण पर चले, जो हडसर से धनछो तक की एक सुंदर यात्रा है। ट्रेकिंग का असली रोमांच यहीं से शुरू होता है। हमने हड़सर से ट्रेक शुरू किया और धनों तक ट्रैक करते हुए घने जंगली, अल्पाइन घास के मैदानों, चट्टानी इलाकों, खड़ी चोटियों, झरनों और घुमावदार नदियों से गुजरे और हिमालय के लुभावने दृश्यों का आनंद लिया। हड़सर से करीब 8 किलोमीटर दूर मणिमहेश के रास्ते में धनछो के पास एक खूबसूरत झरना है। जहाँ पहुँचने में करीब 8-9 घण्टे लग गए। यहाँ चलते समय गला बहुत सूख रहा था, इसलिए हाथ में पानी की खाली बोतल रखना जरूरी था। पूरे ट्रैक पर

ताजे पानी के झरने थे, जिसके सामने बिसलेरी भी फेल थी। हम बस थोड़ा-थोड़ा करके बोतल भरते रहे और जरूरत के हिसाब से घूँट भरते रहे। शाम तक हम धनो पहुंच गए जहां रात भर रुकने के लिए एक अस्थायी आश्रय स्थल है और यही हमारा बेस कैंप था। हम सब बहुत थके हुए थे। पहुँचने पर, चूंकि मौसम थोड़ा ठंडा था, इसलिए हमें सबसे पहले पीने के लिए गर्म पानी और चाय के साथ कुछ हल्का नाश्ता दिया गया, इससे हमारे शरीर में ऊर्जा भर गई। यात्रा के दौरान हमारे एक सहयात्री को ऊंचाई पर होने वाली बीमारी के लक्षण और तकलीफ होने लगी। उसे सिर दर्द, जी मिचलाना, बहुत ज्यादा थकान, सांस फूलना आदि होने लगा। इसलिए गाइड ने उसे आराम करने, खूब पानी पीने, और ज्यादा बात न करने की सलाह दी। उसे कुछ जरूरी दवाइयों और बार-बार सूंघने के लिए कपूर दिया गया। दो अन्य यात्री बहुत थके हुए थे और बहुत असहज महसूस कर रहे थे, इसलिए धनछो से आगे की यात्रा के लिए गाइड और स्थानीय लोगों की सहायता से तीन खच्चरों की व्यवस्था की गई। जिस पर बैठ उन तीनों ने आगे की यात्रा पूरी की। हमने अपने अपने ट्रैकिंग बैग में कुछ सामान रखा था जिसके लिए हमने पोर्टर (पिट्ठू) किराए पर लिए थे। ये पोर्टर रास्ता दिखाने और बिना किसी परेशानी के मुश्किल पहाड़ी रास्ते को पार करने में बहुत मददगार साबित हुए। धनछो में हमने अपना सामान बेस कैंप में छोड़ दिया और आगे की ट्रैकिंग के लिए सिर्फ जरूरी सामान ही बैगपैक में लिया। हमने इस बैग में कुाऊ सूखे मेवे (काजू, बादाम, किशमिश), बिस्कुट, चॉकलेट और आवश्यक दवाइयों आदि रखी।

धनछो प्रकृति की सौन्दर्यता के बीच बसा एक आकर्षक विश्राम स्थल है। हिमालय की प्राचीन सुंदरता को निहारने के लिए एक आदर्श, स्थान, जहाँ से हिमालय की आसपास की चोटियों के लुभावने दृश्य दिखाई देते हैं। वहाँ हमने आश्चर्यजनक दृश्यों की तस्वीरें लीं और इस खूबसूरत जगह की शांति में आराम किया। साथी यात्रियों के साथ किस्से साझा किये और आगे की चुनौतीपूर्ण लेकिन प्रतीक्षित यात्रा के लिए तैयार होने लगे। रात के खाने का आनंद लिया साथ ही हमारे मन में यह भी था कि अगले दिन की यात्रा हमें दिव्य मणिमहेश झील के करीब ले जाएगी। तारों भरे आसमान के नीचे आराम किया और ठंडी पहाड़ी हवा में खुद को तरोताजा होने दिया। सुबह हम जल्दी उठे, फ्रेश हुए और हल्के चाय-नाश्ता करने के बाद, सुबह करीब चार बजे हम आगे की यात्रा के लिए निकल पड़े। चलते समय अक्सर हमें सावधान रहना पड़ता था, वजह थी पहाड़ी से गिरते पत्थर। यात्रा के दौरान हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, भूस्खलन, धंसे हुए मिट्टी के रास्ते, पथरीली उबड़ खाबड़ जमीन आदि। रास्ते में हमें कई ग्लेशियर मिले जहाँ से आगे जाने का कोई रास्ता नहीं था। गाइड द्वारा लाए गए पोर्टर और स्थानीय सहायकों ने अपने साथ लाए खुदाई के औजारों से ग्लेशियर पर एक रास्ता बनाया, जिस पर एक बार में एक ही व्यक्ति चल सकता था, इस तरह से लगभग 500 मीटर का रास्ता तय किया गया। यह इस यात्रा का एक अलग स्तर का रोमांच था। सावधानी से चलते हुए हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे।

मणिमहेश ट्रैक 13-14 किलोमीटर का बताया जाता है, लेकिन यह लगभग 16 किलोमीटर का है। यह

सच है कि यह कठिन है, लेकिन इतना भी नहीं कि आप इसे कर ही न सकें। यदि आप ट्रैकिंग का असली मजा लेना चाहते हैं तो पैदल यात्रा करें, खच्चर को तभी परेशान करें जब आपके पास कोई विकल्प न हो। मेरा अपना अनुभव यह है कि 16 किलोमीटर की दूरी में 12 किलोमीटर की चढ़ाई वास्तव में कठिन है, हालांकि, यदि आप एक ग्रुप में हैं और एक बार में छोटी-छोटी दूरी तय करने के उद्देश्य से धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं. तो अपने गंतव्य तक पहुंचना आसान होगा। रास्ते में कुछ खाने-पीने की दुकाने भी हैं, जो धनछो, सुंदरासी या गौरीकुंड के पास और आखिर में मणिमहेश झील के पास मिलती हैं।

यात्रा के दौरान धनछो और गौरीकुंड के बीच सुंदरासी से पहले एक जगह ऐसी आई, जहां ऐसा लग रहा था कि आटा चक्की की आवाज साफ सुनाई दे रही है। लेकिन दूर-दूर तक पहाड़ और पत्थरों के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। तब हमारे गाइड ने बताया कि इस जगह को शिव घराट के नाम से जाना जाता है। इस रहस्य से सभी हैरान थे। इस दौरान ऐसा लग रहा था कि जैसे उक्त स्थान पर पहाड़ में आटा चक्की घूम रही हो। इस प्राकृतिक करिश्माई दृश्य को मन में संजोते हुए हम ट्रैक पर आगे बढ़े। हम सुबह करीब 10 बजे गौरी कुंड पहुँचे। यहाँ गौरी कुंड और शिव क्रोत्री नामक दो धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण जल निकाय हैं। अत्यधिक कंपकंपाती हुई ठण्ड की वजह से कुछ एक यात्रियों ने ही वहाँ स्नान किया। गौरीकुंड से हमने मणिमहेश कैलाश का पहला मनोरम दृश्य देखा। मणिमहेश कैलाश को प्रत्यक्ष रूप से देखकर हम सभी अभिभूत हो गए। हमारी आधी थकान दूर हो गई और सभी मणिमहेश झील तक जल्दी पहुँचने के लिए और भी उत्साहित हो गए, जो अब सिर्फ 1.5 किलोमीटर दूर थी। हमने वहाँ के एकमात्र ढाबे से चाय पी, थोड़ा आराम किया और झील की और आगे बढ़े।

अंतिम पड़ाव कठिन और चुनौतीपूर्ण है, जैसे-जैसे हम ऊंचाई की ओर बढ़ रहे थे, वहां मौजूद वनस्पतियों की संख्या और उनकी ऊंचाई भी कम होती जा रही थी। इस कारण हमें ऑक्सीजन की कमी महसूस होने लगी। अब हमें बाकी 1.5 किलोमीटर की दूरी तय करने में करीब 2 घंटे लग गए। लेकिन इस पवित्र स्थान पर पहुँचने की उत्सुकता ने हमारे उत्साह को बनाए रखा। फिर वह क्षण आया जब हम पवित्र झील पर पहुँच गए, और हमारे सामने थे हमारे आराध्य साक्षात शिवरुपी मणिमहेश कैलाश। मणिमहेश पर्वत की चोटी पर स्थित, हमने एक चट्टान देखी जिसका आकार शिवलिंग जैसा है, जिसे भगवान शिव का एक रूप माना जाता है और इसे मणिमहेश शिवलिंगम के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि मणिमहेश शिखर केवल कुछ एक लोगों को ही दिखाई देता है। अक्सर यहां मौसम खराब रहता है, बादल छाए रहते हैं, जिसके कारण इस कैलाश शिखर का दर्शन दुर्लभ हो जाता है। हम खुद को भाग्यशाली मानते हैं कि हमें मणिमहेश शिवलिंग के प्रत्यक्ष दर्शन मिले।

गाइड ने हमें बताया कि पहाड़ की तलहटी में स्थित लगभग बर्फ से ढकी जमीन को स्थानीय लोग शिव का चौगान कहते हैं और यह झील मणिमहेश कैलाश शिखर की तलहटी में 13000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। मणिमहेश झील के एक कोने में हमें शिव

की संगमरमर की मूर्ति के साथ त्रिशूल दिखाई दिया, जिसकी हमने भावसहित पूजा की। फिर इस झील की परिधि में घूमते हुए हम काफी देर तक प्राकृतिक दृश्य का आनंद लेते रहे। झील और उसके आसपास का मनोरम दृश्य स्वत: ही हम यात्रियों को आकर्षित कर रहा था, जिसे देखकर यात्री भावविभोर और मंत्रमुग्ध हो रहे थे। झील का शांत जल घाटी में बर्फ से ढ़की चोटियों को प्रतिबिम्बित कर रहा था, मानो दूर दिखाई देने वाला अलौकिक शिवलिंग पास आ गया हो और हाथ बढ़ाकर उसे हुआ जा सकता हो। इसका शांत वातावरण शांति और तृप्ति की गहरी अनुभूति प्रदान कर रहा था। हम उस दिव्य वातावरण में डूब गए और इस स्थान के आध्यात्मिक ज्ञान के साथ एक गहरा जुडाव महसूस किया।

कुछ देर इन अद्भुत पलों का आनंद लेने के बाद, हमने मणिमहेश झील से धनछो तक की अपनी ट्रेकिंग शुरू की। उतरते समय हमे रास्ते में मिलने वाले आश्चर्यजनक परिदृश्यों का एक अलग दृष्टिकोण देखने को मिला, साथ ही नए कोणों से प्राकृतिक सुंदरता की सराहना करने के अवसर भी मिले। धनछो में बेस कैंप पर वापस आकर हमने आराम किया। रात के आराम के बाद तरोताजा होकर, हम हड़सर की अपनी यात्रा के अगले चरण के लिए तैयार हुए। सुबह नाश्ते और चाय के बाद, हमने हड़सर की और अपनी यात्रा जारी रखी। अब रास्ता ज्यादा जाना-पहचाना लग रहा था और उतरना आसान था, जिससे हम खूबसूरत नजारों का आनंद ले पा रहे थे और साथी यात्रियों के साथ सौहार्द का आनंद ले पा रहे थे। दोपहर से काफी पहले, हम अपने ट्रैक के शुरुआती बिंदु हड़सर पहुँच गए। हमारी बस वहाँ पहले से ही तैयार थी, जहाँ से हम भरमौर पहुँचे। अपना बाकी सामान उठाने के बाद, आराम करने के लिए कुछ समय निकालकर, हम वापस पठानकोट की ओर चल पड़े। रास्ते भर अपनी पूरी की गई अविश्वसनीय यात्रा पर विचार करते हुए पता ही नहीं चला कब रेलवे स्टेशन पहुँच गए।

मुझे यह यात्रा रोमांच, आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सुंदरता का एक आदर्श मिश्रण लगी, जिसने इसे हम सभी के लिए एक यादगार अनुभव बना दिया। मैं इस यात्रा को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन भी मानता हूँ, जिसमें विभिन्न राज्यों और विभिन्न समुदायों के लोग एक साथ आए, अपने अनुभव और सद्भाव साझा किए। हिमाचल प्रदेश के स्थानीय लोगों का मिलनसार व्यवहार, उनका आकर्षक सीधा और ईमानदार व्यवहार हमेशा याद रहेगा। मैंने अपनी इस यात्रा के अंत में निष्पत्ति, कार्यसिद्धि, और आध्यात्मिक तृप्ति की भावना का आनंद लिया। वस्तुत: मणिमहेश कैलाश यात्रा मेरे लिए जीवन भर की यात्रा है, और इससे जुड़ी यादें हमेशा मेरे साथ रहेंगी। मैं हिमालय के हृदय में एक और रोमांच के लिए फिर से हिमालय से मिलने और आध्यात्मिक विकास की अपनी यात्रा के एक नए आयाम का अनुभव करने की आशा करता हूँ।

अंत में, अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि मणिमहेश यात्रा न केवल एक अत्यंत आध्यात्मिक और महत्वपूर्ण यात्रा है, बल्कि यह हिमालयी क्षेत्र की अद्भुत सुंदरता का अनुभव करने और स्थानीय लोगों की अनूठी संस्कृति और परंपराओं को देखने का अवसर भी है।

लघुकथा: देश प्रेम

- संचित पाहूजा, निरीक्षक, सी.सी.ए., दिल्ली क्षेत्र

अजय एक कंपनी में एक सामान्य कर्मचारी था। अनुशासन और निष्ठा के गुण उसमें कूट-कूट कर भरे थे। हर रोज़ की तरह आज भी वह समय पर कार्यालय पहुंच कर अपने काम में जुट गया था। ग्यारह बजे उसके साथी चाय पीने चले गए और हमेशा की तरह किसी ने उसे साथ चलने के लिए नहीं कहा क्योंकि वे जानते थे कि वह सीट छोड़ कर नहीं जाएगा। अचानक कंपनी के सीईओ ने उसे अपने कमरे में बुलवाया। एक पुरानी और मोटी-सी फाइल उसे देते हुए वे बोले कि इसमें सभी ज़रूरी कागजात हैं जिनके आधार पर उसे कंपनी की बजट रिपोर्ट दो दिन में तैयार करके देनी है।

अपनी सीट पर आकर अजय ने बहुत ध्यान से फाइल के पन्ने पलटने शुरू किए। उसमें बहुत-से कागज़ अस्त-व्यस्त और बिना टैग किए रखे थे। अजय ने सोचा कि रिपोर्ट तो वह जल्दी से बना लेगा लेकिन यदि किसी को भी उस रिपोर्ट से संबंधित कागज़ देखने की जरूरत पड़ी तो इस हालत में तो कोई भी फाइल में से कोई कागज़ ढूंढ ही नहीं पाएगा। अजय ने तसल्ली से उन दस्तावेज़ों को एक-एक करके पढ़ना शुरु किया।

तभी उसका सहकर्मी, सुनील, उसकी डेस्क पर

साभार: गुगल

आया और उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोला, ''अरे अजय, ये क्या कर रहे हो? रिपोर्ट बनाकर पटक दो और आराम करो, क्यों सारे कागज़ फैलाकर सरदर्द पाल रहे हो। क्यों इतना समय और ऊर्जा बर्बाद कर रहे हो? तुम्हें क्या मिलेगा फालतू काम करके''?

अजय मुस्कुराया और जवाब दिया, ''कभी-कभी छोटी-छोटी बातों में ही असली संतोष मिलता है, सुनील।'' सुनील चिढ़कर चला गया।

अजय मन ही मन सोचने लगा ''बात तो सुनील की ठीक है, कहीं इस चक्कर में रिपोर्ट बनाने में देर न हो जाए, क्या सचमुच इतना ध्यान देने का कोई फायदा भी होगा, उसे यह सब करके हासिल क्या होगा?''

अचानक उसे स्वयं पर क्रोध आने लगा कि वह भी किसकी बातों में आ रहा है। माना कि इसका उसे कोई बड़ा इनाम नहीं मिलने वाला है, लेकिन फिर भी वह अपने काम में शिद्दत से लगा रहा। वह जानता था कि इस काम में उसे बहुत अधिक समय अतिरिक्त लग जाएगा लेकिन अगर ये दस्तावेज सही तरीके से सही फाइल में व्यवस्थित नहीं किए गए तो कहीं न कहीं किसी को परेशानी हो सकती है, और फिर कंपनी की छवि पर भी असर पड़ सकता है।

अजय ने हर दस्तावेज की स्थिति ठीक की, हर पन्ने पर क्रम संख्या डाली और फिर करीने से सबको फाइल में रख दिया। चूंकि सब व्यवस्थित था तो अजय ने कंपनी की बजट रिपोर्ट शाम तक ही तैयार कर ली और साहब को दे भी दी।

एक महीने बाद, कंपनी में ऑडिट टीम आई। कंपनी की बजट रिपोर्ट पर काम करते हुए उन्होंने संबंधित फाइल माँगी। इतनी व्यवस्थित फाइल देखकर वे बहुत हैरान हुए और इसकी सराहना की।

इस पर कंपनी के सीईओ ने अजय को अपने कमरे में बुलाया और कहा, ''अजय, तुमने जिस समर्पण और निष्ठा से यह किया, वह हम सबके लिए अनुकरणीय है। छोटे कामों में भी ईमानदारी और मेहनत ही असली देश प्रेम है। जब हम अपनी जिम्मेदारी पूरी लगन से निभाते हैं, तो यह देश के लिए हमारी सेवा का हिस्सा बन जाता है, चाहे वह सीमा पर हो या यहां दफ्तर में।''

अपनी प्रसन्नता पर नियंत्रण रखते हुए अजय ने हाथ जोड़कर कहा ''धन्यवाद सर''।

बाहर आकर भी देर तक अजय के मन में सीईओ सर के शब्द गूंजते रहे। उसे लग रहा था जैसे उसे कोई बहुत बड़ा मैडल मिला हो। उसे एहसास हुआ कि जो काम वह करता था, वह कोई साधारण काम नहीं था। यह देश की सेवा का एक हिस्सा था, क्योंकि जब हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी पूरी करता है, तो वह पूरे समाज और देश की प्रगति में योगदान करता है।''

स्व-सहायता (सेल्फ हेल्प) पुस्तकें कितनी प्रभावी?

- ऋषि पाल सिंह, अधीक्षक, दिल्ली उत्तर

आधुनिक समय में स्व-सहायता पुस्तकों का प्रकाशन एक व्यापक चलन बन गया है। ये पुस्तकें अक्सर जीवन में परिवर्तन, व्यक्तिगत विकास और सफलता का वादा करती हैं। विशेष रूप से, ये उन पाठकों के बीच लोकप्रिय हैं जो करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य और वित्त जैसे क्षेत्रों में मार्गदर्शन चाहते हैं।

हालांकि, इन पुस्तकों की वास्तविक प्रभावशीलता एक महत्वपूर्ण बहस का विषय है। क्या ये पुस्तके वास्तव में सहायक होती हैं, या केवल सतही युक्तियों और अपरीक्षित सलाह का संग्रह होती है? यह लेख आलोचनात्मक विश्लेषण, उदाहरणों और विद्वानों की अंतर्दृष्टि के माध्यम से स्व-सहायता पुस्तकों की प्रामाणिकता, प्रभावशीलता और सीमाओं का परीक्षण करने का प्रयास करता है।

स्व-सहायता पुस्तकों की लोकप्रियता:

स्व-सहायता पुस्तकों की लोकप्रियता हाल के वर्षों में चरम पर है। हर साल अनगिनत शीर्षक प्रकाशित होते हैं। जिनका कारोबार अरबों रुपये में होता है। नेपोलियन हिल की ''थिंक एंड ग्रो रिच'', रोंडा बर्न की ''द सीक्रेट'', और डेल कार्नेगी की ''हाउ टू विन फ्रेंड्स एंड इन्फ्लुएंस पीपल जैसी पुस्तकों की विश्वभर में लाखों प्रतियां बिक चुकी है और वे आज भी प्रिंट हो रही है।

इन पुस्तकों की सफलता का कारण इनके त्वरित समस्या समाधान, सार्वभौमिक प्रयोज्यता और व्यक्तिगत सशक्तीकरण के वादे हैं। लेकिन इनकी विषयवस्तु अक्सर जटिल जीवन परिस्थितियों को अति-सरल बनाकर पेश करती है, जिससे उनकी व्यावहारिक उपयोगिता पर प्रश्न खड़े होते हैं।

वैज्ञानिक आधार का अभाव

स्व-सहायता पुस्तकों की सबसे बड़ी आलोचना यह है कि उनमें अक्सर वैज्ञानिक आधार का अभाव होता है। कई लेखक गहन शोध के बजाय व्यक्तिगत अनुभवों या अप्रमाणित विचारों पर भरोसा करके ही पुस्तक लिखते हैं।

उदाहरण के लिए, राँडा बर्न की ''द सीक्रेट'' ने ''आकर्षण के नियम'' का प्रचार किया, जिसमें दावा किया गया कि सकारात्मक सोच से धन, स्वास्थ्य और सफलता प्राप्त हो सकती है। हालांकि यह विचार प्रेरणादायक हो सकता है, लेकिन इसके समर्थन में कोई वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक या चिकित्सकीय साक्ष्य नहीं है।

आलोचकों का मानना है कि इस प्रकार की सलाह उसकों को यह विश्वास दिला सकती है कि केवल सकारात्मक सोचने से वास्तविक समस्याएं हल हो जाएंगी, जबकि इन समस्याओं के समाधान के लिए व्यावहारिक रणनीति और कड़ी मेहनत आवश्यक होती

है।

इसी प्रकार, नेपोलियन हिल की ''थिंक एंड सो रिच'' धन प्राप्ति का सूत्र देने का दावा करती है, लेकिन इसके दावों के समर्थन में ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

स्व-सहायता पुस्तके अक्सर सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और बाहरी परिस्थितियों की अनदेखी करती हैं, जो व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तिवाद पर अत्यधिक जोर:

स्व-सहायता पुस्तके व्यक्तिगत प्रयास पर जोर देती हैं, लेकिन प्रणालीगत और प्रासंगिक चुनौतियों की उपेक्षा करती हैं। वे इस विचार को बढ़ावा देती हैं कि सफलता या असफलता पूरी तरह से व्यक्ति के नियंत्रण में है। हालांकि, यह विचार केवल आंशिक रूप से ही सही है।

उदाहरण के लिए, टोनी रॉबिंस, एक प्रमुख स्व-सहायता गुरु, 'अंदर की शक्ति को उजागर करने की रणनीतियों का प्रचार करते हैं, लेकिन गरीबी या भेदभाव जैसी सामाजिक असमानताओं का प्रभाव शायद ही कभी स्वीकार करते हैं।

यह दृष्टिकोण कभी-कभी पीड़ित को दोषी ठहराने की मानसिकता पैदा कर सकता है, जहां बाहरी बाधाओं के बावजूद व्यक्ति को ही उसकी परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

सैद्धांतिक बनाम व्यावहारिक सलाह:

अधिकांश स्व-सहायता पुस्तकें सैद्धांतिक सलाह देती हैं, जिन्हें वास्तविक जीवन में लागू करना कठिन होता है।

उदाहरण के लिए, टोनी रॉबिंस की पुस्तक 'अवेकन द जायंट विदिन' पाठकों को अपने लक्ष्यों के लिए बड़े कदम उठाने की प्रेरणा देती है। हालांकि, यह पुस्तक प्रेरणा बनाए रखने, बाधाओं पर काबू पाने या अपत्याशित चुनौतियों से निपटने के बारे में विशेष मार्गदर्शन नहीं देती।

इसी तरह, स्टीफन कोवे की ''द सेवन हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव पीपल'' में दिए गए सिद्धांत जैसे ''सक्रिय रहे'' और ''अंत को ध्यान में रखकर शुरुआत करें'' मूल्यवान तो हैं, लेकिन इन आदतों के क्रियान्वयन के लिए संदर्भ, आत्म-जागरुकता और दृढ़ता की आवश्यकता होती है, जिसे पुस्तक में स्पष्ट रूप से नहीं समझाया गया है।

अवास्तविक वादे:

स्व-सहायता पुस्तकें अक्सर बड़े वादे करती हैं, जिन्हें अधिकांश पाठक पूरा नहीं कर पाते।

उदाहरण के लिए, लुईस है की ''यू कैन हील योर लाईफ'' या नेपोलियन हिल की ''थिंक एंड सो रिच'' ऐसे परिणामों का वादा करती हैं जो अत्यधिक आशावादी या असंभव होते हैं।

इससे पाठकों में अवास्तविक अपेक्षाएं उत्पन्न होती हैं। जब वादा किए गए परिणाम प्राप्त नहीं होते, तो यह निराशा का कारण बन सकता है।

प्लेसबो प्रभाव:

इन सीमाओं के बावजूद, स्व-सहायता पुस्तकों के

कुछ लाभ हैं। वे पाठकों को अस्थायी प्रेरणा और नियंत्रण की भावना दे सकती हैं। उदाहरण के लिए, ''रिच डैड पुअर डैड'' जैसी पुस्तकें संघर्षरत उद्यमियों को प्रेरणा प्रदान कर सकती हैं। हालांकि, यह प्रेरणा अक्सर अल्पकालिक होती है। यह चक्र पलायनवाद का रूप ले सकता है, जहां पाठक एक के बाद दूसरी स्व-सहायता पुस्तक की और आकर्षित होते हैं, लेकिन उनके जीवन में वास्तविक बदलाव नहीं आता।

प्रामाणिक स्व-सहायता के उदाहरण:

जबकि अधिकांश स्व-सहायता पुस्तके त्रुटिपूर्ण होती हैं, कुछ अपनी व्यावहारिकता और प्रामाणिकता के कारण अलग खड़ी होती है। जेम्स क्लियर की ''एटॉमिक हैबिट्स' व्यवहार विज्ञान पर आधारित है और छोटे-छोटे परिवर्तनों के महत्व पर जोर देती है। यह आदत निर्माण के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियां प्रदान करती है। इसी तरह, विक्टर क्रंकल की ''मैन्स सर्च फॉर मीनिंग'' जीवन के गहन अनुभवी पर आधारित है, जो इसे एक प्रभावशाली और गहन स्व-सहायता पुस्तक बनाती है।

निष्कर्ष: स्व-सहायता की दोधारी तलवार:

स्व-सहायता पुस्तके न तो स्वाभाविक रूप से अच्छी है और न ही बुरी। उनकी प्रभावशीलता पाठक की समझ और पुस्तक की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। हालांकि वे प्रेरणा और उत्साह प्रदान कर सकती है, लेकिन उनका वैज्ञानिक आधार, अवास्तविक वादे और व्यक्तिवाद पर अत्यधिक जोर उनकी सीमाएं उजागर करता है। अंततः, किसी भी पुस्तक को व्यावहारिक जीवन अनुभव, रडता और अनुकूलनशीलता का स्थान नहीं दिया जा सकता।

सफलता एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो कई आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होती है। स्व-सहायता पुस्तके एक प्रारंभिक बिंदु हो सकती है, लेकिन वास्तविक विकास के लिए निरंतर प्रयास और आलोचनात्मक सोच की आवश्यकता होती है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन
निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल
- भारतेंदु हरिश्चंद्र

विशेष कवरेज: पुरानी दिल्ली

- संजय कुमार बंसल, सहायक आयुक्त, दिल्ली उत्तर

पुरानी दिल्ली, जिसे शाहजहांनाबाद के नाम से भी जाना जाता है, मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा 1638 में स्थापित की गई थी। यह शहर भारत की ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है और यहाँ निम्नलिखित ऐतिहासिक महत्व पर्यटन स्थल हैं।

1. **लाल किला:** यह एक विशाल मुगल किला है, जिसे शाहजहां ने बनवाया था। यह मुगल वास्तुकला का अद्भुत उदाहरण है और यमुना नदी के किनारे स्थित है।

2. **जामा मस्जिद:** भारत की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक, यह मस्जिद शाहजहां द्वारा बनवाई गई थी। इसकी भव्यता और वास्तुकला इसे एक महत्वपूर्ण धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल बनाती है।

3. **चांदनी चौक:** यह पुरानी दिल्ली का प्रमुख बाजार है और अपने प्राचीन हाट, संकरी गलियों, और ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ खाने-पीने की प्रसिद्ध दुकानों के साथ-साथ पारंपरिक कपड़े और आभूषणों का बाजार भी है।

4. **रजिया सुल्तान का मकबरा:** रजिया सुल्तान, जो दिल्ली की पहली महिला सुल्तान थीं, का मकबरा भी पुरानी दिल्ली में स्थित है।

5. **हवेलियाँ:** पुरानी दिल्ली की संकरी गलियों में कई ऐतिहासिक हवेलियाँ हैं, जो मुगल काल की शान-शौकत और समृद्धि को दर्शाती हैं।

6. **बल्लीमारान:** बल्लीमारान पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में स्थित एक ऐतिहासिक मोहल्ला है, जो अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह इलाका दिल्ली के मुगलकालीन इतिहास और पुरानी दिल्ली की जीवंतता का प्रतीक है। ''बल्लीमारान'' नाम का मतलब है ''बल्ली (डंडे) चलाने वाले''। ऐसा कहा जाता है कि यह नाम नाविकों और मछुआरों के डंडों (बल्ली) से जुड़ा हुआ है, जो यहां कभी बड़ी संख्या में रहते थे।

पुरानी दिल्ली अपनी ऐतिहासिक इमारतों, संकरी गलियों, जीवंत बाजारों और सांस्कृतिक धरोहरों के कारण एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल मानी जाती है।

यहाँ कुछ प्रमुख बाजारों का वर्णन किया गया है:

1. **'चांदनी चौक':**

- यह पुरानी दिल्ली का सबसे प्रसिद्ध और व्यस्त

साभार: गुगल

बाजार है, जिसे मुगल सम्राट शाहजहां की बेटी, जहाँआरा बेगम ने बनवाया था।

– यहाँ इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़े, आभूषण, और मसालों से लेकर पारंपरिक भोजन तक सब कुछ मिलता है।

– यह जगह खास तौर पर 'परांठे वाली गली', 'घीवाली गली', और 'नटराज की दही भल्ले' जैसी खाने की दुकानों के लिए प्रसिद्ध है।

2. 'खारी बावली':

– यह एशिया का सबसे बड़ा मसालों का बाजार है, जहाँ मसाले, सूखे मेवे, हर्बल प्रोडक्ट्स, और औषधियाँ मिलती हैं।

– यहाँ की गलियाँ मसालों और हर्बल सुगंधों से महकती रहती हैं।

3. 'दरियागंज':

– यह पुरानी दिल्ली का एक प्रमुख बाजार है, खासकर अपनी पुरानी किताबों और साहित्य के लिए प्रसिद्ध।

– हर रविवार को यहाँ विशाल 'संडे बुक मार्केट' लगता है, जहाँ पुरानी और नई किताबें बहुत ही किफायती दरों पर मिलती हैं।

4. 'चावड़ी बाजार':

– यह बाजार पारंपरिक शादी के कार्ड्स, सजावटी सामान, और कागज उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है।

– चावड़ी बाजार में भारी संख्या में थोक व्यापारी भी पाए जाते हैं जो छोटे व्यवसायों को सामग्री उपलब्ध कराते हैं।

5. 'भगीरथ पैलेस':

– यह भारत का सबसे बड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार है। यहाँ इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक सामान की बिक्री होती है।

– यह बाजार विशेष रूप से लाइटिंग और इलेक्ट्रिकल फिटिंग के लिए प्रसिद्ध है।

6. 'किनारी बाजार':

– यह बाजार शादी-ब्याह और त्यौहारों के कपड़ों और सजावट के सामान के लिए जाना जाता है।

– यहाँ जरी, गोटा, किनारी, और पारंपरिक भारतीय कपड़ों पर काम करने वाले कारीगरों का भी बड़ा योगदान है।

7. 'सरकारी बाजार':

– यह बाजार औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हर्बल और आयुर्वेदिक प्रोडक्ट्स की भरमार होती है।

8. 'दरीबा कलां':

– यह बाजार पुरानी दिल्ली में चांदनी चौक के पास स्थित है और चांदी के आभूषणों के लिए प्रसिद्ध है।

– यहाँ पुराने समय से लेकर आज तक पारंपरिक चांदी के आभूषण और गहनों का व्यापार होता आ रहा है।

पुरानी दिल्ली के ये बाजार अपनी विविधता, इतिहास और संस्कृति को दर्शाते हैं, और खरीदारी के साथ-साथ यहाँ की जीवंतता और धरोहर का अनुभव करना भी बहुत खास है।

बल्लीमारान पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में स्थित एक ऐतिहासिक मोहल्ला है, जो अपनी

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह इलाका दिल्ली के मुगलकालीन इतिहास और पुरानी दिल्ली की जीवंतता का प्रतीक है।

विशेषताएँ:

1.मिर्ज़ा ग़ालिब का घर: बल्लीमारान उर्दू के महान शायर मिर्ज़ा ग़ालिब के निवास स्थान के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ उनका हवेली स्थित है, जिसे अब संग्रहालय में बदल दिया गया है। यह स्थान उर्दू साहित्य प्रेमियों के लिए एक तीर्थस्थल के समान है।

2. नाम का इतिहास: ''बल्लीमारान'' नाम का मतलब है ''बल्ली (डंडे) चलाने वाले''। ऐसा कहा जाता है कि यह नाम नाविकों और मछुआरों के डंडों (बल्ली) से जुड़ा हुआ है, जो यहां कभी बड़ी संख्या में रहते थे।

3. संस्कृति और विरासत: बल्लीमारान पुरानी दिल्ली की गलियों की जीवंतता, संकरी गलियों, हवेलियों और छोटी-छोटी दुकानों के लिए जाना जाता है। यहां पर पारंपरिक जूते, चश्मे, और विभिन्न हस्तशिल्प वस्तुएं खरीदने के लिए बाजार है।

साभार: गुगल

4. पुरानी हवेलियाँ और संरचनाएँ: यह इलाका अपने ऐतिहासिक भवनों और पुरानी हवेलियों के लिए भी जाना जाता है। इन हवेलियों में पारंपरिक भारतीय और मुगल वास्तुकला के सुंदर नमूने देखने को मिलते हैं।

5. खानपान: बल्लीमारान और इसके आस-पास के इलाकों में आपको पुरानी दिल्ली का स्वादिष्ट स्ट्रीट फूड मिल सकता है, जिसमें पराठे, चाट, और कबाब शामिल हैं।

महत्त्व:

बल्लीमारान न केवल दिल्ली की ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करता है, बल्कि यह आधुनिकता और परंपरा का संगम भी प्रस्तुत करता है। यह स्थान साहित्य, संस्कृति और इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है।

यदि आप इतिहास और संस्कृति के प्रशंसक हैं, तो बल्लीमारान में घूमना और इसकी विरासत का अनुभव करना एक यादगार अनुभव हो सकता है।

बल्लीमारान की व्यापारिक विशेषताएँ इसे पुरानी दिल्ली के महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों में से एक बनाती हैं। यहाँ के व्यापार का मुख्य रूप से संबंध पारंपरिक और स्थानीय उत्पादों से है, जो इसे एक अनूठी पहचान देते हैं।

बल्लीमारान की प्रमुख व्यापारिक विशेषताएँ:

1. चश्मों और ऑप्टिकल उपकरणों का

बाजार:

– बल्लीमारान दिल्ली के सबसे प्रसिद्ध ऑप्टिकल बाजारों में से एक है। यहाँ कई दशक पुराने चश्मों और उनकी फ्रेम बनाने वाली दुकानें मौजूद हैं। ये दुकानें न केवल पारंपरिक चश्मे बेचती हैं, बल्कि आधुनिक डिज़ाइनों और ऑप्टिकल उपकरणों का भी व्यापार करती हैं।

2. जूते और चप्पल का व्यापार:

– बल्लीमारान की गलियाँ पारंपरिक और हाथ से बने जूतों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ आपको चमड़े और अन्य प्रकार की सामग्री से बने जूते मिलते हैं, जो उचित कीमतों पर बेचे जाते हैं। यह इलाका किफायती और टिकाऊ फुटवियर के लिए लोकप्रिय है।

3. हस्तशिल्प और पारंपरिक वस्त्र:

– यहाँ हस्तनिर्मित वस्त्र, जैसे दुपट्टे, शॉल, और कुर्ते की बड़ी मांग है। इसके साथ ही पारंपरिक कढ़ाई और डिज़ाइन किए गए कपड़ों की दुकानों की भरमार है।

4. खाद्य उत्पाद और मसाले:

– बल्लीमारान के आसपास कई छोटी दुकानें और स्टॉल हैं जो मसाले, सूखे मेवे, और पारंपरिक मिठाइयाँ बेचते हैं। यहाँ के खाद्य उत्पाद पूरे दिल्ली में अपनी गुणवत्ता के लिए मशहूर हैं।

5. स्मॉल-स्केल मैन्युफैक्चरिंग और रिपेयर वर्क:

– बल्लीमारान में छोटे स्तर पर सामान बनाने और मरम्मत करने वाले शिल्पकारों की बड़ी संख्या है। ये लोग अपने कौशल के माध्यम से स्थानीय व्यापार को बढ़ावा देते हैं।

6. परफ्यूम और इत्र का व्यापार:

– बल्लीमारान की गलियों में आपको पारंपरिक भारतीय इत्र और परफ्यूम की दुकानें भी मिलेंगी। ये इत्र अपने प्राकृतिक और प्राचीन फार्मूलों के लिए प्रसिद्ध हैं।

7. गली-मोहल्ला बाजार का माहौल:

– बल्लीमारान के छोटे-छोटे बाजार लोगों के रोजमर्रा के सामान जैसे घरेलू उपयोग की चीज़ें, जड़ी-बूटियाँ और पारंपरिक दवाइयाँ बेचते हैं। यहाँ की दुकानों का नेटवर्क पुरानी दिल्ली के व्यापारिक तंत्र का अभिन्न हिस्सा है।

व्यापारिक माहौल:

बल्लीमारान का व्यापारिक माहौल पारंपरिक और आधुनिक व्यापार का मिश्रण है। छोटी दुकानों से लेकर थोक व्यापार तक, यहाँ हर प्रकार का व्यवसाय संचालित होता है। स्थानीय व्यापारी, कारीगर, और छोटे उद्योग बल्लीमारान को एक जीवंत व्यापारिक केंद्र बनाते हैं।

विशेषता:

बल्लीमारान का व्यापारिक दृष्टिकोण मुख्यत: व्यक्तिगत संपर्क और ग्राहक सेवा पर आधारित है। यहाँ के व्यापारी पुराने ग्राहकों से संबंध बनाने और उन्हें गुणवत्ता का आश्वासन देने में विश्वास करते हैं।

इस प्रकार, बल्लीमारान केवल एक ऐतिहासिक स्थल ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण व्यापारिक हब भी है, जो पुरानी दिल्ली के व्यापारिक इतिहास और संस्कृति को जीवित रखे हुए है।

दरिबा कलाँ, जो चांदनी चौक में स्थित है, पुरानी दिल्ली का एक प्रसिद्ध बाजार है, जो मुख्य रूप से अपने आभूषण और चांदी के व्यापार के लिए जाना जाता है। यह बाजार मुगलकालीन समय से अस्तित्व में है और आज भी अपनी विशिष्ट व्यापारिक गतिविधियों और उत्पादों के लिए लोकप्रिय है।

दरिबा कलाँ की व्यापारिक विशेषताएँ:

1. चांदी और आभूषण का प्रमुख केंद्र:

- दरिबा कलाँ मुख्य रूप से चांदी के आभूषणों, जैसे हार, कंगन, अंगूठी, और झुमकों के लिए प्रसिद्ध है। यह बाजार भारत के सबसे पुराने चांदी व्यापारिक केंद्रों में से एक है।

- यहाँ चांदी के बर्तन, मूर्तियाँ और अन्य सजावटी वस्तुएँ भी उपलब्ध हैं।

2. कीमती धातुओं का व्यापार:

- चांदी के अलावा, यहाँ सोने और अन्य कीमती धातुओं से बने आभूषण भी बेचे जाते हैं।

- पारंपरिक और आधुनिक डिज़ाइनों का अच्छा संगम मिलता है, जो स्थानीय और विदेशी खरीदारों को आकर्षित करता है।

3. इत्र (परफ्यूम) का व्यापार:

- दरिबा कलाँ अपनी इत्र की दुकानों के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ आपको प्राकृतिक इत्र (अत्तर) और सुगंधित तेलों की बड़ी विविधता मिलती है। ये इत्र अपने प्राचीन और प्राकृतिक तरीकों से बनाए जाते हैं।

4. हस्तनिर्मित आभूषण:

- दरिबा कलाँ में कई कारीगर हस्तनिर्मित आभूषण तैयार करते हैं। इन आभूषणों में पारंपरिक भारतीय शैली के साथ-साथ आधुनिक डिजाइन भी मिलते हैं।

- यहाँ के कारीगर अपने काम की बारीकी और गुणवत्ता के लिए मशहूर हैं।

5. सस्ती और किफायती कीमतें:

- दरिबा कलाँ का एक बड़ा आकर्षण इसकी किफायती कीमतें हैं। यहाँ की दुकानों में उचित दाम पर चांदी और आभूषण मिलते हैं, जो इसे आम जनता और थोक खरीदारों दोनों के लिए आकर्षक बनाता है।

6. प्राचीन सिक्कों और एंटीक वस्तुओं का व्यापार:

- कुछ दुकानें प्राचीन सिक्कों, चांदी की थालियों, और अन्य एंटीक वस्तुओं का व्यापार करती हैं। ये वस्तुएँ इतिहास और कला प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं।

7. दंत चिकित्सा के उपकरण:

- एक रोचक तथ्य यह है कि दरिबा कलाँ में चांदी के अलावा दंत चिकित्सा के उपकरण और अन्य धातु से बने विशेष उपकरण भी बेचे जाते हैं।

ऐतिहासिक महत्व:

दरिबा कलाँ का नाम फ़ारसी शब्दों से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''चांदी का बाजार''। यह बाजार मुग़ल शासकों के समय से चांदी और कीमती वस्तुओं के व्यापार के लिए प्रमुख स्थान रहा है।

आधुनिक व्यापारिक माहौल:

आज भी, दरिबा कलाँ अपने पारंपरिक उत्पादों और व्यापारिक वातावरण को बनाए रखते हुए

आधुनिक खरीदारी अनुभव प्रदान करता है। यहाँ थोक और खुदरा व्यापार दोनों सक्रिय हैं, और यह स्थान शादी के गहनों और उपहारों के लिए विशेष रूप से लोकप्रिय है।

दरिबा कलाँ का दौरा करना एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अनुभव है, जो व्यापार और परंपरा का अद्वितीय मेल प्रस्तुत करता है।

खारी बावली भारत और एशिया का सबसे बड़ा थोक मसाला बाजार है, जो पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक इलाके में स्थित है। यह बाजार सैकड़ों सालों से व्यापार का केंद्र रहा है और आज भी अपनी विशिष्ट व्यापारिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है।

खारी बावली की प्रमुख व्यापारिक विशेषताएँ

1. मसालों का थोक व्यापार:

– खारी बावली मुख्य रूप से मसालों के थोक व्यापार के लिए जानी जाती है। यहाँ भारतीय और विदेशी मसालों का बड़ा संग्रह उपलब्ध है।

– हल्दी, मिर्च, धनिया, जीरा, इलायची, दालचीनी, जायफल, लौंग जैसे मसाले बड़ी मात्रा में बिकते हैं।

साभार: गूगल

– यह बाजार भारत के विभिन्न राज्यों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों को मसालों की आपूर्ति करता है।

2. सूखे मेवों का व्यापार:

– खारी बावली सूखे मेवों का भी प्रमुख केंद्र है। यहाँ काजू, बादाम, अखरोट, पिस्ता, किशमिश, और खुबानी जैसे मेवे थोक और खुदरा दोनों स्तरों पर बेचे जाते हैं।

– त्योहारों और शादी-विवाह के मौसम में यहाँ की बिक्री चरम पर रहती है।

3. जड़ी-बूटियों और आयुर्वेदिक उत्पादों का व्यापार:

– बाजार में औषधीय जड़ी-बूटियाँ, आयुर्वेदिक उत्पाद और हर्बल सामग्री भी व्यापक रूप से उपलब्ध हैं।

– यहाँ आंवला, अश्वगंधा, गिलोय, और सफेद मूसली जैसे उत्पाद पारंपरिक दवाओं के निर्माण के लिए खरीदे जाते हैं।

4. चाय और हर्बल टी:

– खारी बावली में विभिन्न प्रकार की चाय और हर्बल टी का व्यापार भी किया जाता है। यहाँ दार्जिलिंग, असम और नीलगिरी की चाय के साथ-साथ हर्बल ब्लेंड्स भी उपलब्ध हैं।

5. अनाज और दालों का व्यापार:

– यहाँ चावल, गेहूँ, और विभिन्न प्रकार की दालें भी थोक में बेची जाती हैं। यह बाजार खाद्य अनाजों का भी एक बड़ा केंद्र है।

6. इत्र और सूखे फूल

– खारी बावली में इत्र (अत्तर) और सूखे फूलों का व्यापार भी प्रमुख है। इनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और सजावट के लिए किया जाता है।

7. थोक व्यापार का नेटवर्क:

– खारी बावली का मुख्य आकर्षण इसका थोक व्यापार नेटवर्क है। यहाँ व्यापार मुख्य रूप से थोक खरीदारों के लिए होता है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों और विदेशों में इन उत्पादों को वितरित करते हैं।

– छोटे व्यापारी और रिटेलर्स यहाँ से माल खरीदकर अपने क्षेत्रों में बेचते हैं।

8. सस्ती कीमतें और उच्च गुणवत्ता

– खारी बावली में वस्तुएँ अन्य बाजारों की तुलना में किफायती कीमतों पर मिलती हैं। यह थोक व्यापारियों और छोटे कारोबारियों के लिए लाभकारी बाजार है।

– यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले मसाले और उत्पाद बेचे जाते हैं, जो इसे ग्राहकों के बीच लोकप्रिय बनाते हैं।

9. पारंपरिक व्यापारिक माहौल:

– खारी बावली की तंग गलियाँ और सैकड़ों साल पुरानी दुकानें इस बाजार को ऐतिहासिक और पारंपरिक रूप देती हैं।

– व्यापार का तरीका अभी भी पारंपरिक है, जहाँ ग्राहक और व्यापारी व्यक्तिगत रूप से सौदेबाजी करते हैं।

खारी बावली का ऐतिहासिक महत्व

– खारी बावली का इतिहास 17वीं सदी तक जाता है। यह बाजार मुग़लकालीन समय में भी व्यापार का केंद्र था।

– इसका नाम ''खारी बावली'' यहाँ स्थित एक खारी (नमकीन) पानी की बावली (कुएँ) के कारण पड़ा।

आज का व्यापारिक महत्व

खारी बावली न केवल भारत, बल्कि पूरे एशिया में मसालों, सूखे मेवों और जड़ी-बूटियों के सबसे बड़े आपूर्तिकर्ताओं में से एक है। यहाँ का व्यापार भारत की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है और यह बाजार भारत की पारंपरिक व्यापारिक संस्कृति का प्रतीक है।

रजिया सुल्तान का मकबरा दिल्ली के एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में जाना जाता है, जो 13वीं सदी की भारत की पहली और इकलौती महिला सुल्तान रज़िया सुल्तान की याद में बना है। यह मकबरा पुरानी दिल्ली के तुर्कमान गेट इलाके में स्थित है।

रजिया सुल्तान का ऐतिहासिक परिचय

रजिया सुल्तान दिल्ली सल्तनत की शासक थीं, जिन्होंने 1236 से 1240 तक शासन किया। वह इल्तुतमिश की बेटी थीं और उन्हें उनकी योग्यता और नेतृत्व क्षमता के कारण शासक बनाया गया। हालांकि, उनका शासनकाल लंबा नहीं रहा, लेकिन उन्होंने अपने शासन में प्रशासन और न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ किया।

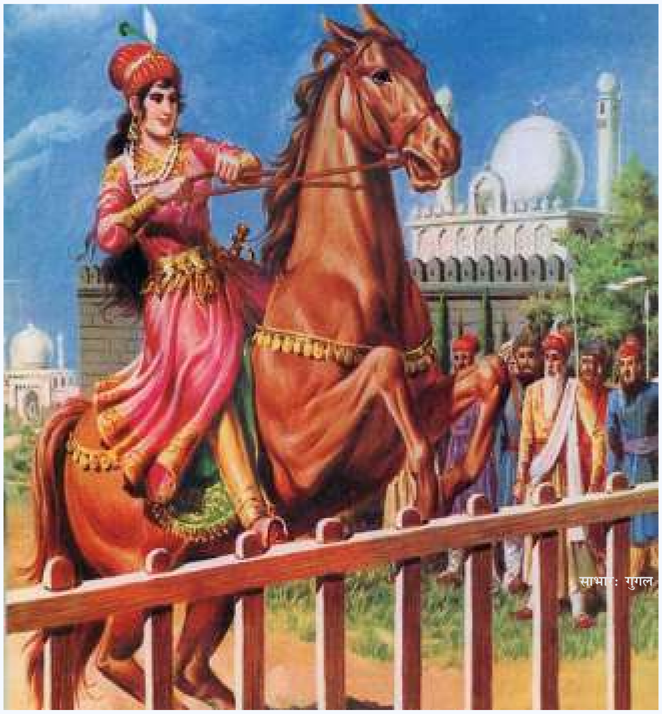

रजिया का निधन 1240 में एक विद्रोह के दौरान हुआ, और उन्हें दिल्ली में ही दफनाया गया।

मकबरे की विशेषताएँ:

1. स्थान:

– रजिया सुल्तान का मकबरा पुरानी दिल्ली की संकरी गलियों में स्थित है। यह तुर्कमान गेट के पास बुलबुली ख़ाना नामक क्षेत्र में है।

2. साधारण निर्माण:

– मकबरा बहुत साधारण है और किसी भव्य मुगल मकबरे (जैसे हुमायूँ का मकबरा या ताजमहल) जैसा नहीं है।

– यह एक छोटा सा संरक्षित स्मारक है, जिसमें कोई सजावट या भव्यता नहीं है, जो यह दर्शाता है कि रजिया का अंत विवादों और राजनीतिक संघर्षों के बीच हुआ था।

3. संरचना:

– मकबरे की संरचना में एक साधारण चबूतरा है, जहाँ रजिया की कब्र और उनके भाई या अन्य परिजन की एक और कब्र मौजूद है।

– मकबरे के आसपास मस्जिद और मदरसे के अवशेष भी देखे जा सकते हैं।

4. गुमनामी में मकबरा:

– रजिया सुल्तान जैसी महान शासक के मकबरे को आज ऐतिहासिक रूप से वह महत्व नहीं मिला है, जो अन्य स्मारकों को मिला। यह मकबरा गुमनामी में है और संकरी गलियों के कारण इसे खोजना भी चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

5. पर्यटन और संरक्षण:

– यह मकबरा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के संरक्षण में है।

– हालाँकि यह एक ऐतिहासिक स्थल है, इसे देखने कम ही पर्यटक आते हैं।

रजिया सुल्तान का मकबरे का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व:

– यह मकबरा भारत के इतिहास में महिलाओं के नेतृत्व और उनके संघर्ष का प्रतीक है।

– रजिया सुल्तान ने एक पुरुषप्रधान समाज में अपनी क्षमता और ताकत का प्रदर्शन किया और यह मकबरा उनकी उस विरासत को दर्शाता है।

इसे देखने जाना इतिहास प्रेम?

राष्ट्रीय अप्रत्यक्ष कर, सीमा शुल्क और नारकोटिक्स अकादमी (नासिन) पालसमुद्रम

- राम सरन सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा)

सिविल सेवा परीक्षा द्वारा चयनित भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारियों को अप्रत्यक्ष कर राजस्व (सीमा शुल्क एवं माल एवं सेवा कर) से जुड़े विभिन्न विषयों की जानकारी और कर व्यवस्थाओं से अवगत कराने के लिए राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स अकादमी (नासिन) द्वारा लगभग दो वर्ष का गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। उल्लेखनीय है कि अप्रत्यक्ष कर राजस्व से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, अधिनियमों तथा नियमों के साथ-साथ राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियमों तथा नियमों इत्यादि की भी जानकारी प्रदान की जाती है। मुझे पहली बार वर्ष 2020 में राजभाषा मॉडयूल से संबंधित विषयों पर चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ था और तब से मुझे लगातार राजभाषा से संबंधित विषयों पर व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हो रहा है। भारतीय राजस्व सेवा के युवा अधिकारियों के साथ राजभाषा से संबंधित विषयों पर चर्चा का बहुत ही सुखद अनुभव प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि 2020 और 2021 में नासिन फरीदाबाद द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण का स्वरूप अपनाया गया था क्योंकि उसे समय कोविड महामारी के कारण फिजिकली रूप से कक्षाओं का आयोजन नहीं किया जा सकता था। वर्ष 2022 और वर्ष 2024 में मुझे कक्षाओं में प्रशिक्षण के दौरान अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श और चर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस संवाद सत्र के दौरान अधिकारियों के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनके विषय से संबंधित विचारों की गहनता से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैं स्वयं भी उन अधिकारियों के साथ संवाद करने के उपरांत अपने आत्मविश्वास और विभिन्न विषयों से जुड़े ज्ञान में अत्यधिक वृद्धि महसूस कर रहा हूं। यह मेरे

भारतीय राजस्व सेवा के 74 और 75 वें बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ संवाद सत्र के यादगार चित्र।

लिए बहुत ही सौभाग्य की बात है कि मुझे उनके साथ में विचार विमर्श और संवाद करने का अवसर प्राप्त हुआ।

राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन एवं प्रचार प्रसार से संबंधित विषयों पर लगभग 8 सत्रों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जैसा कि विदित है कि पहले राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स अकादमी (नासिन) फरीदाबाद हरियाणा में स्थित था, जहां राजस्व सेवा से जुड़े ग्रुप ''ए'' अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 14 सितंबर को राजभाषा सम्मलेन दिल्ली में आयोजित किया गया जिसके उपरांत प्रत्येक केंद्र सरकार के कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन 14 सितंबर से लेकर के 29 सितंबर तक किया गया। प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय दिल्ली क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले समस्त आठ आयुक्तालयों द्वारा भी संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस आयोजन से जुड़ी समस्त व्यवस्थाओं के उपरांत मैं भी अपने कार्य से जुड़े हुए सभी कार्यों को अंतिम रूप देने में जुटा हुआ था। इसी दौरान अक्टूबर माह 2024 के द्वितीय सप्ताह में एक अधिकारी का संदेश मुझे प्राप्त होता है, जिसमें अधिकारी द्वारा मेरा ईमेल आईडी मांगा जाता है। कॉल करने वाले अधिकारी द्वारा मुझे यह सूचित किया गया कि भारतीय राज्य सेवा के 75 वें बैच के प्रशिक्षु अधिकारी राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स अकादमी (नासिन) पालसमुद्रम आंध्र प्रदेश में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारियों को 4 नवंबर 2024 से 8 नवंबर 2024 तक राजभाषा मॉडयूल का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है और इस हेतु आपकी सेवाओं की आवश्यकता है। गत वर्षो की भांति मुझे इस बात की आशा थी कि मुझे इस बार भी राजभाषा मॉडयूल पर प्रशिक्षण प्रदान करने का अवसर दिया जाएगा इसलिए मैंने अधिकारी को अपना ईमेल आईडी प्रदान कर दिया। अगले दिन प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय से मुझे संदेश प्राप्त हुआ कि पालसमुद्रम से राजभाषा मॉडयूल के सत्र में संबोधन प्रदान करने के लिए मुझे आमंत्रित किया गया है, जिसकी अनुमति प्रधान आयुक्त कार्यालय द्वारा मुझे प्रदान की जा रही है। नासिन, पालसमुद्रम के उपनिदेशक के द्वारा मेरे यात्रा विवरण और वहां पहुंचने के बारे में जानकारी मांगी गई। मैंने अधिकारी महोदय को सूचित किया कि अपनी टिकट आदि की व्यवस्था हो जाने के बाद में सूचित करुंगा। उपनिदेशक महोदय द्वारा मुझे पहले ही सूचित किया गया था कि मुझे बेंगलुरु तक की टिकट लेनी है और उसके बाद में कार्यालय द्वारा मुझे पालसमुद्रम पहुंचने के लिए कार की व्यवस्था की जाएगी। मैं, 3 नवंबर 2024 को यहां से पालसमुद्रम जाने और 5 नवंबर 2024 को वापस आने के लिए हवाई जहाज की टिकट लेने के बाद इसकी सूचना उपनिदेशक महोदय को प्रदान कर दी। क्योंकि मुझे 4 तारीख को 11:15 बजे एक सत्र संबोधित करना था इसलिए मेरा 3 तारीख को वहां पहुंचना अनिवार्य था। दिनांक 3 नवंबर 2024 को मैं दिल्ली एयरपोर्ट पर पहुंच गया और वहां से एयर इंडिया के जहाज से शाम 7:00 बजे बैंगलोर एयरपोर्ट पर पहुंच गया। बैंगलोर

एयरपोर्ट पर पहुंचने से पहले ही पालसमुद्रम से एक निरीक्षक महोदय का मेरे पास संदेश आ चुका था जिसमें कार और वाहन चालक दोनों का नंबर दिया गया था। बेंगलुरु एयरपोर्ट पर पहुंचने से पहले ही वाहन चालक का मेरे पास मैसेज आ चुका था। बैंगलोर एयरपोर्ट पर पहुंचकर मैंने वाहन चालक से संपर्क किया और उन्होंने मुझे सूचित किया कि वह बेसमेंट में पार्किंग पर हैं। गाड़ी के पास पहुंचने के बाद मैं गाड़ी में बैठ गया और मैंने ड्राइवर साहब से पूछा कि पालसमुद्रम पहुंचने में कितना समय लगेगा उन्होंने मुझे सूचित किया कि बेंगलुरु एयरपोर्ट से पालसमुद्रम की दूरी लगभग 100 किलोमीटर है जिसे 2 घंटे में पूरा किए जाने की संभावना है। जैसे ही हम गाड़ी में बैठे और थोड़ी दूर चले इस समय तेज बारिश शुरू हो गई, क्योंकि दिल्ली के मौसम में बारिश नहीं थी और बेंगलुरु पहुंचते ही बारिश शुरू हुई तो हमको भी बहुत अचम्भा हुआ और उत्सुकतावश मैंने ड्राइवर से पूछा कि क्या यहां रोज बारिश होती है तो उसने मुझे सूचित किया कि हां बेंगलुरु में इस समय रात में कभी भी बारिश हो सकती है। लगभग 2 घंटे की यात्रा के बाद 9:00 बजे हम पालसमुद्रम के गेस्ट हाउस में पहुंच चुके थे। स्वागत कक्ष में उपस्थित कार्मिकों के द्वारा हमारा सामान निकाल कर के हमको गेस्ट हाउस में पहुंचाया गया जहां पर हमारा कमरा ग्राउंड फ्लोर पर था। गेस्ट हाउस के कमरे में अपना सामान लगाने के बाद और फ्रेश होने के बाद जब हम लोग तैयार हुए तो हमको यह सूचित किया गया कि हमारे डिनर की व्यवस्था हमारे कमरे में ही कर दी गई है। वैसे हमें यह भी सूचित किया गया कि सभी अधिकारियों को आधिकारिक मैस में जाकर के ही अपना नाश्ता लंच और डिनर करना होता है। क्योंकि मुझे 11:15 राजभाषा से संबंधित विषय पर सत्र को संबोधित करना था इसीलिए हम खाना-वाना खा करके जल्दी से सो गए। सुबह 5:00 अपनी आदत के अनुसार उठ जाने पर जब मैं खिड़की के बाहर देखा तो बहुत अच्छा मौसम हो रहा था, कमरे में रखे योगामेट का प्रयोग करते हुए बालकनी में बैठकर के मैंने थोड़ी देर योग और व्यायाम किया, इसके बाद मै तैयार हो गया और अपने सत्र से संबंधित विषयों पर अध्ययन और

नासिन, पालासमुद्राम के शिलान्यास और सीमा शुल्क नाव के चित्र

विचार किया। सुबह करीब 9:00 बजे ऑफिसर मैस में जाकर मैंने अपना नाश्ता किया और वापस आकर के स्वागत कक्ष में ट्रेनिंग हाल के बारे में जानकारी प्राप्त की वहां पर उपस्थित कार्मिकों के द्वारा मुझे यह सूचित किया गया कि एकेडमिक बिल्डिंग यहां से कुछ दूरी पर स्थित है। वहां पर उपस्थित कार्मिकों के द्वारा मुझे गोल्फ कार्ट प्रदान की गई जिससे मैं 10:45 पर उस भवन में स्थित फैकल्टी रूम पर पहुंच गया। फैकल्टी रूम में मेरी मुलाकात श्री वेंकटेश्वर उपनिदेशक राजभाषा से हुई जो पहले सत्र को संबोधित करने के उपरांत वहां पर बैठे हुए थे। उनके साथ प्रारंभिक स्तर पर परिचय का आदान-प्रदान करते हुए मैं अपने कक्षा की तैयारी में लग गया। 11:10 मिनट पर मैं ट्रेनिंग हाल में पहुंच गया और वहां पर उपस्थित सहायक को मैंने कंप्यूटर में पेन ड्राइव लगाने का निर्देश दिया। 11:15 तक मैंने अपनी सारी तैयारी पूरी कर ली और वहां पर उपस्थित अधिकारियों से अनुरोध किया कि सत्र की शुरुआत होने वाली है तो यदि इनका कोई सहयोगी ट्रेनिंग हाल में उपलब्ध नहीं है तो उनको बुला ले। सभी प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा ट्रेनिंग हाल में अपनी उपस्थिति प्रदान करने के बाद मैंने स्वयं अपना परिचय दिया और अपने विषय से संबंधित विवरण देते हुए मैंने उनको यह सूचित किया की राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राजभाषा नीति के प्रभावी अनुपालन एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए जो भी संवैधानिक प्रावधान राजभाषा अधिनियम और नियमों इत्यादि के विषय में मैं उपस्थित प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करूंगा।

पालसमुद्रम, धीरे-धीरे ही सही यह नाम देश और विदेश के मानचित्र पर परिलक्षित हो रहा है। यह स्थान राष्ट्रीय राजमार्ग 44, गोरन्टमाल मंडल, श्री सत्य साईं जिला, आन्द्रप्रदेश, भारत में स्थित है। इस स्थान को केंद्रीय, अप्रत्यक्ष कर, सीमा शुल्क बोर्ड, राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने महत्वकांक्षी प्रोजेक्ट-राष्ट्रीय सीमा शुल्क, अप्रत्यक्ष कर एवं नारकोटिक्स अकादमी की स्थापना के लिए चिन्हित किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस राष्ट्रीय अकादमी की स्थापना सी.बी.आई.सी के अंतर्गत

नासिन, पालासमुद्राम के प्रवेश द्वार और एयर इंडिया के हवाई जहाज का चित्र।

कार्यरत समूह ''ए'' वर्ग के तथा प्रत्येक वर्ष भारतीय राजस्व सेवा में प्रवेश करने वाले नवनियुक्त अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए की गई है।

श्रीमती निर्मला सीतारामण, माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 5 मार्च 2022 को इस अकादमी के शिलान्यास के अवसर पर एक ''ज्ञान का वृक्ष'' भी रोपित किया गया। इस अकादमी का भव्य द्वार बनाया गया है, जिसके प्रवेश द्वारा पर ही सीधे हाथ पर स्वागत कक्ष के लिए एक ईमारत बनाई गई है। द्वार के पास ही ज्ञान की उड़ान दर्शाते हुए एक पक्षी की तस्वीर के साथ बड़े अक्षरों में अकादमी का नाम लिखा हुआ है जिसके चारों ओर एक फव्वारा भी बनाया गया है। प्रवेश द्वार के बाए हाथ पर आँगनतुकों के लिए पार्किंग व्यवस्था है। प्रवेश द्वार से साइकिल और पैदल चलने का ट्रेक शुरू होता है जो कई किलोमीटर तक है जिस पर आप तेज धूप और बारिश में भी साइकिलिंग और रनिंग कर सकते है। उल्लेखनीय है कि जो साइकिल और रनिंग ट्रेक है उसके ऊपर जो शेड बनाया गया है उसके ऊपर सोलर पैनल लगाए गए हैं जिससे कि सौर ऊर्जा का भी उत्पादन किया जा सकता है। प्रवेश द्वार से ही आपको झील दिखनी शुरू हो जाएगी आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में एक गांव है पालसमुद्रम, इस छोटे से गांव में लगभग हजार व्यक्ति रहते हैं। इस गांव के पास एक झील है जो नासिन अकादमी के प्रवेश द्वार से ही हमको दिखने लगती है।

इस परिसर के प्रवेश द्वार से आगे चलने पर हमें दाहिने तरफ और बाएं तरफ दोनों तरफ हमें इमारतें दिखाई देती हैं जिसमें अधिकतर इमारत हमारे बाएं तरफ पड़ती है। जब हम प्रवेश द्वार के आगे बढ़ते हैं तब सबसे पहले हमको प्रशासनिक खंड दिखाई देता है। इस प्रशासनिक खंड के प्रवेश द्वार पर जो स्वागत कक्ष बनाया गया है वहां पर हमारे मित्र देशों के ध्वज लगे हुए हैं तथा उसके प्रवेश द्वार के बाएं तरफ आगंतुकों के बैठने की व्यवस्था है प्रशासनिक खंड लगभग दो मंजिला है जहां पर प्रशासन से संबंधित अधिकारियों और कार्मिकों के बैठने की व्यवस्था होगी।

नासिन, पालासमुद्राम परिसर में ईमारतों और प्रवेश द्वार का हवाई चित्र।

प्रशासनिक खंड के पीछे जो सबसे अच्छी इमारत हमें आकर्षित करती है वह यहां का सभागार इस सभागार में लगभग 500 अतिथियों के बैठने की व्यवस्था है और इसके अंदर सभी सुसज्जित एवं तकनीकी रूप से सक्षम व्यवस्थाओं को बनाया गया है। इस सभागार में एक भव्य प्रवेश द्वार तथा निकासी के लिए अलग-अलग द्वारा बनाए गए हैं। सभागार के आसपास बहुत सारे पौधे लगाए गए हैं जो की आने वाले समय में इसकी खूबसूरती को और बढ़ा देंगे। प्रवेश द्वार से निकल करके जब हम सामने जाते हैं तो वहां पर हमें परेड ग्राउंड दिखाई देता है जहां पर प्रशिक्षण के उपरांत पर प्रशिक्षु अधिकारियों के पास आउट परेड की व्यवस्था की गई है। इस परेड ग्राउंड को हेलीकॉप्टर लैंडिंग के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है। इस परेड ग्राउंड के साथ ही पालसमुद्रम झील दिखाई देती है जो इसकी खूबसूरती को बढ़ा देती है।

प्रशासनिक खंड और सभागार के बाद जो सबसे महत्वपूर्ण इमारत है वह है एकेडमिक खंड, जहां पर प्रशिक्षण के लिए अलग-अलग ट्रेनिंग हाल बनाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि एकेडमिक खंड में एक साथ बहुत सारे अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अलग-अलग ट्रेनिंग हाल बनाए गए हैं और इस ट्रेनिंग हाल के साथ ही फैकल्टी के रूम बनाए गए हैं जहां पर फैकेल्टी ट्रेनिंग से पूर्व आकर के अपने को व्यवस्थित कर सकते हैं। प्रत्येक ट्रेनिंग हाल के बाहर दो सत्रों के बीच में जलपान की व्यवस्था की गई है जहां पर प्रशिक्षु अधिकारी समय के अनुसार हल्के-फुल्के व्यायाम भी कर सकते हैं। एकेडमिक इमारत के बीच में सुंदर प्रांगण बनाया गया है जहां पर बहुत ही खूबसूरत फव्वारों की व्यवस्था की गई है। यह इमारत अन्य इमारतें की तरह गोलाकार है और इसके प्रवेश द्वार और निकासी द्वारा अलग-अलग बनाए गए हैं। प्रत्येक ट्रेनिंग हाल के अंदर नवीनतम तकनीकी युक्त व्यवस्थाओं को अपनाया गया है जहां पर एक बड़ी स्क्रीन के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

एकेडमिक इमारत के साथ ही नवीनतम तकनीकी युक्त सुसज्जित लाइब्रेरी और फॉरेंसिक लैब बनाई गई है जहां पर राजस्व से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए अधिकारियों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान किए जाने की व्यवस्था की गई है। एकेडमिक खंड के पीछे और झील के साथ में सीनियर फैकल्टी के लिए आवासीय व्यवस्था की गई है। इस इमारत के थोड़ा आगे बढ़ने के बाद हमें दाहिनी तरफ हॉस्टल-1 दिखाई देगा जहां पर प्रशिक्षु अधिकारियों के रहने ठहरने की व्यवस्था की गई है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रशिक्षु अधिकारियों के हॉस्टल कमरे में अध्ययन-अध्यापन और आराम करने की सभी सुविधाओं की व्यवस्था की गई है, सेंट्रलाइज्ड एसी के माध्यम से सभी कमरों के वातावरण को नियमित करने की व्यवस्था की गई है। वैसे तो प्रत्येक प्रशिक्षु अधिकारियों को एक हॉस्टल का कमरा दिया जाता है परंतु उस कमरे में दो आदमी भी रह सकते हैं। प्रशिक्षु अधिकारियों की सभी आवश्यक व्यवस्थाएं उनके कमरे में की गई है। हॉस्टल की इमारत 3 से 4 मंजिला है और ऐसे दो हॉस्टल इमारते बनाई गई है। हॉस्टल के

बाहर पार्किंग की व्यवस्था है तथा इसके साथ ही वहां पर साइकलिंग स्टैंड भी बनाए गए हैं। जहां पर बहुत सारी साइकिल खड़ी रहती हैं अधिकारी इन साइकिलों का उपयोग कर सकते हैं। हॉस्टल में स्वास्थ्य और सुरक्षा दोनों का पूर्णता व्यवस्था की गई है।

हॉस्टल-1 के दायें तरफ अधिकारियों के लिए मैस की व्यवस्था की गई है। मैस के मुख्य हाल में लगभग 300 अधिकारियों के एक साथ नाश्ता, लंच और डिनर करने की व्यवस्था की गई है इसके साथ ही उसके बगल में लगभग 100 विशिष्ट अतिथियों के नाश्ते लंच और डिनर की व्यवस्था भी की गई है। मैस के बड़े हॉल में बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है। मैस में नाश्ता लंच और डिनर के अलग-अलग टाइम निर्धारित है जिसकी सूचना हॉस्टल के प्रत्येक कमरे में बोर्ड पर दी गई है। मैस में सबसे अच्छी बात यह है कि यहां पर एक अधिकारी स्वयं ही अपने हिसाब से अपने लिए खाना ले सकता है। मैस के सभी कर्मचारी बहुत ही योग्य है वे नाश्ता लंच और डिनर के दौरान सभी अतिथियों का अच्छी तरह से ध्यान रखते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि नाश्ता तथा लंच और डिनर में प्रत्येक दिन खाने की अलग-अलग चीज बनाई जाती हैं। इस मैस में स्वास्थ्य और सफाई का पूर्णता ध्यान रखा जाता है। उल्लेखनीय है कि हॉस्टल वन के पीछे ही उतना ही बड़ा हॉस्टल 2 बनाया गया है। हॉस्टल 2 के पीछे टाइप 2 से लेकर टाइप 4 तक स्टाफ क्वार्टर बनाए गए हैं और वहीं पर ही महानिदेशक के रहने की व्यवस्था की गई है। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त उल्लेखित सभी इमारते बनकर पूर्णता तैयार हो चुकी हैं और यहां पर बिजली पानी की बहुत ही सुंदर व्यवस्था की गई है।

इस अकादमी परिसर में उपरोक्त इमारत के अतिरिक्त बहुत सारी अन्य आवश्यक इमारत बनाना प्रस्तावित है। जिसमें मुख्य रूप से हैं, चिकित्सा भवन, बैंक, पोस्ट ऑफिस, एथलेटिक ट्रैक और फुटबॉल ग्राउंड, क्रिकेट स्टेडियम, इनडोर स्टेडियम आदि इमारतें निर्माणाधीन है।

जैसा कि ऊपर भी उल्लेखित किया जा चुका है कि इस परिसर में इमारत निर्माण से जुड़ी आधुनिक तकनीक का भी उपयोग किया गया है जैसे सौर ऊर्जा वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, वेस्ट मैनेजमेंट आदि की आधुनिक व्यवस्था की गई है।

क्योंकि केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड मुख्य रूप से समुद्री मार्ग और वायु मार्ग से व्यक्तियों और सामानों की आवाजाही का नियंत्रण एवं निरीक्षण करता है। इसीलिए स्मृति चिन्ह के रूप में सीमा शुल्क की एक नाव और एयर इंडिया का एक जहाज भी रखा गया है। क्योंकि यह परिसर कई किलोमीटर में फैला हुआ है इसलिए इस परिसर को घूमने के लिए गोल्फ कार्ट की व्यवस्था और साइकिल की व्यवस्थाएं की गई है। आने वाले समय में जब इस परिसर की सभी इमारतें पूर्णता तैयार हो जाएगी तो यह परिसर भारत की मुख्य इमारत एवं मुख्य प्रशिक्षण स्थल में अपना स्थान बना लेगा तथा विदेशों से आने वाले प्रशिक्षण अधिकारियों और आगंतुकों के द्वारा भी इसका नाम देश-विदेश में फैल जाएगा।

माननीय वित्त राज्य मंत्री श्री पंकज चौधरी के द्वारा केंद्रीय माल एवं सेवाकर, दिल्ली क्षेत्र के नांगल राया, दिल्ली स्थित नवनिर्मित कार्यालय भवन के उद्घाटन समारोह दिनांक- 08.10.2024 के छायाचित्र।

शिट्रा हाइट्स विभागीय अधिकारी आवासीय परिसर के उद्घाटन समारोह दिनांक- 01.03.2024 के छायाचित्र।

योग दिवस, 2024 के अवसर पर कार्यालय में आयोजित योग शिविर के छायाचित्र।

जीएसटी दिवस, 2024 के छायाचित्र।

प्रार्थना

– संजय कुमार बंसल, सहायक आयुक्त (पुरानी दिल्ली मण्डल)

तीर्थ सा मन कर दिया है बस तुम्हीं ने
उम्र भर अहसान भूलूंगा नहीं मैं।

यह हृदय पाहन बना रहता सदा ही
सच कहूँ, यदि जिंदगी में तुम न मिलते
यूँ न फिर मधुमास मेरा मित्र होता
और अधरों पर न ये फिर फूल खिलते
भग्न मंदिर फिर बनाया बस तुम्हीं ने
उम्र भर अहसान भूलूंगा नहीं मैं।

तुम मिले हो क्या मुझे साथी सफर में
राह से कुछ मोह जैसा हो गया है
एक सूनापन कि जो मन को डसे था
राह में गिरकर कहीं वो खो गया है
शोक को उत्सव किया है बस तुम्हीं ने
उम्र भर अहसान भूलूंगा नहीं मैं।
मैं ना पाता सीख ये भाषा नयन की

तुम न मिलते उम्र मेरी व्यर्थ होती
साँस ढोती शव, विवश अपना स्वयं ही
और मेरी जिंदगी किस अर्थ होती
प्राण को विश्वास सौंपा बस तुम्हीं ने
उम्र भर अहसान भूलूंगा नहीं मैं।

अश्रु से मेरी नहीं पहचान थी कुछ
दर्द से परिचय तुम्हीं ने तो कराया
छू दिया तुमने हृदय की धड़कनों को
गीत का अंकुर तुम्हीं ने तो उगाया
मूक मन को स्वर दिये हैं बस तुम्हीं ने
उम्र भर अहसान भूलूंगा नहीं मैं।

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है, तो वो देवनागरी ही हो सकती है।
–जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

मन की अभिलाषा

- ज्योति, अधीक्षक, लेखा परीक्षा -2

सुनो ना
इस बार जब आना
कई सावन कई भादो
हर पल यादों के साए
तन्हाई में जो कुम्हलाए
वो मेरी आँखों के आंसू
बिना कारण कभी बरसे
हर झिझक हर शर्म
अंदर पनपता वो डर
वो अंधेरा वो घना कोहरा
सब लेकर चले जाना
और कर देना
विसर्जित इनको,
बहते हुए पानी में
ना जिसका ठौर हो कोई
नहीं कोई ठिकाना हो
वो बहकर अनंत तक जाए
ना कभी दुबारा मिल पाए
सुनो ना, अबकी बार जब आना
ये सब मुझसे दूर ले जाना!!!

सुनो ना
जीवन अपना जीना है
इन फूलों सा खिलना है
हो तरो ताज़ा महकना है
शबनम सा फिसलना है
बहकना है मचलना है
जिद में आसमां उठाना है
पहाड़ों पर घूमने जाना है
आंखों में तैरते सपनों को
भी साकार करना है
जो किया उपकार प्रभु ने
उनका भी आभार जताना है
नहीं कुंठा में जीना है
नहीं घुट घुट के मरना है
हंसी से ठहाकों से, खुद को सजाना
है
अपनी- सी रसोई में
मनपसंद पकवान पकाना है!!!

सुनो ना
अबकी बार जब आना
थोड़ी फुर्सत लेकर आना
दिल की किताब का
पुलिंदा खोलना है अब
करनी है साफ़
मन की अलमारियां
ये मुझपे बोझ सा है जो
अब उसको हटाना है
करने कई काम जरूरी है
मुझे जीना है ये जीवन
नहीं जीवन बिताना है!!!

मेरी माँ

- *प्रेरणा सिंह, अधीक्षक*

नारी ही नहीं पूर्ण सृष्टि है,
इसके भीतर सृजन की शक्ति है।
पोषण और परिवर्तन की ताकत है।।

जननी ही नहीं, यह सरंक्षण भी है,
भावनाओं का सागर है।
सशक्त और साकार अपने आप में है,
दर्पण को सत्य दिखाने का बल भी है।

सहनशक्ति ही नहीं, यह क्रांति स्वरुप है,
मातृत्व की असीम छाया है।
स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर भी है,
पूर्णिमा का प्रतीक है,
भक्ति की अनुभूति भी है।।

जीवन में जब विपदा आए

- विक्रम पाल मित्तल, अधीक्षक, दिल्ली पश्चिम

जीवन में जब विपदा आए, मत हो ज़्यादा उदास।
राजतिलक की घोषणा भी ले आती कभी वनवास।
समय सदा परिवर्तनशील है, मत खो अपना विश्वास।
समय का विपरीत वेग हो तो, होता स्वर्णमृग आभास।
समझदार भी मूर्ख हो जाता, जनता करती परिहास।
गृहस्थ आश्रम के समय में भोगना पड़ता है संन्यास।
सुख दु:ख, लाभ हानि, जीवन मरण सब आता रास।
वो भी दुश्मन बन जाते हैं, जो थे बिल्कुल ही खास।
समय की मार पड़ी हो तब गिना जाता एक एक ग्रास।
महाराणा प्रताप जी को संकट में खानी पड़ी थी घास।
काली रात जब बीत जाती, होता जीवन में उजास।
हरि भजन कर काम करते, सफल होंगे सब प्रयास।
उनका नज़रिया भी बदल जाएगा जो दे रहे संत्रास।
कष्ट नष्ट सब हो जाएंगे, आएगा जीवन में उल्लास।
कष्ट देकर प्रभु करते हैं भक्ति मार्ग का शिलान्यास।
जो सफल हो भक्ति परीक्षा में, मिले धाम आवास।
सुर असुर जब मिलकर के करते हैं समुद्र मंथन।
पहले हलाहल विष निकलता, फिर त्रयोदश रत्नधन।
कालकूट विष को किया था भोले शंकर ने धारण।
नीलकंठ तबसे कहलाते किया समस्या निवारण।
कामधेनु गाय निकली, उच्चेश्रवा नामक घोड़ा।
इंद्र को मिला ऐरावत हाथी, विष्णु जी को लक्ष्मी जोड़ा।
कौस्तुभ मणि का प्राकटय हुआ, निकला वृक्ष कल्प।

वारुणी नामक मदिरा निकली, रंभा का ना कोई विकल्प।
पारिजात का वृक्ष निकला, शंख मिला पांचजन्य।
चन्द्रमा निकले साथ में धन्वंतरि जी ने किए सब धन्य।
अंत में निकला अमृत कुंभ अमरता प्रदायक।
मोहिनी रूप विष्णु बने बांटने में बड़े सहायक।
सुर असुरों के बीच कुंभ को लेकर हुई छीना झपटी।
अमृत की कुछ बूंदे थी चार जगह थी टपकी।
हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और तीर्थ प्रयागराज।
बारह वर्ष बाद हर इन जगह होता कुंभ आगाज।
सभ्यता संस्कृति धर्म अध्यात्म का अद्भुत संगम।
प्रयागराज की त्रिवेणी संगम का दृश्य बड़ा विहंगम।
समय समय शुभ तिथियों को होते दिव्य शाही स्नान।
जप तप नियम करते स्वाध्याय मनन और दान।
सभी देवों, सभी तीर्थों का होता अद्भुत समागम।
आत्मिक शांति का वर्धन होता, दूर होते कष्ट ग़म।
हवन यज्ञ भजन कीर्तन से उन्नत होता अध्यात्मवाद।
विश्व शांति की हमे कामना, दूर चिंता और अवसाद।
हमारी पुरातन संस्कृति के वैभव का चरमोत्कर्ष।
अपनी जीवटता के कारण ही विश्वगुरू भारतवर्ष।

'ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से देवनागरी अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।''

- रविशंकर शुक्ल

अरे माफी.. फिर भूल गया बोलना

- संजीव मारवाह, प्रशासनिक अधिकारी (सेवानिवृत)

मुझे ... किसी "परम ज्ञानी" "आइटम" ने बोला कि..
..भाई.. तू कर्म भले ही ज़िंदगी में रावण वाले कर...
पर टाइम- टाइम पर 'राम राम जी' बोलता रह बस..
इससे तेरे सारे पाप डिलीट हो जाएंगे..
ओर फिर मौज़ा ही मौज़ा सिर्फ एंजॉयमेंट..
बस.. तभी से भाई.. कर्म मेरे जैसे भी हो पर राम राम टाइम पर करता रहता हूँ..
ओर तो ओर.. अब "राम राम जी" एक डाइरी मैं भी लिखता रहता हूँ...
क्योंकि भाई लोगों कोई रिस्क नहीं लेना अब मेरे को..
क्या पता ?? ऊपर वाला "दोखा" या .. चीटिंग कर गया तो..
ओर.. जुबानी "राम राम जी" को इगनोर कर गया तो..
"लिखित वाला "राम राम जी" तो सबूत होगा मेरे पास..
बस आरटीआई मैं पकड़ लूँगा ऊपर वालो को..
जब कभी भी मेरे "बुरे कर्मो" का ऑब्जेक्ट करेंगे.. या हिसाब करेंगे..
तो.. भाई मेरी आरटीआई का जवाब देना भारी पड़ेगा ऊपर वालों को क्यों कि काम पक्के है मेरे..
कोई छु भी नहीं सकता मेरे को
तो.. भाई लोगो.. कर्म जैसे भी हो पर सबूत पक्के रखो..
अरे माफी.. फिर भूल गया बोलना..

"हिंदी द्वारा समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"
- स्वामी दयानंद

क्या लिखूँ कुछ आये ना अन्तः प्रत्यय में

– अरविंद गुर्जर, पी.सी.सी.ओ. दिल्ली क्षेत्र

क्या लिखूं कुछ सूझता नहीं, छपना हो जो कार्यालय की किताब में।
कुछ सूझे तो कभी फुर्सत ही नहीं, इस कार्यालय के कार्यभार दवाब में।
सोच सोचके ही बस यूँ ही रह जाऊं, बस कुछ लिखने के दिले बेताब में।
लिखने की हसरत फिर यूँही हवा हो जाती, लिखने के बस ख्वाब में।।
क्या लिखूँ कुछ प्रत्यय स्मरण नहीं, करकें भी जोर इस जिगर जहन में।
अक्षर दीपक और शब्द स्रोत संस्कार भी, धुंधले हो जाये इस मन में।
अन्त:करण को प्रण्य प्रकाशित करकें भी, विचार ना आये ध्यान गहन में।
रस छंद अलंकार भी ना ले आकार, शायरी सुहाये नहीं संस्मरण में।।–1

तन तमन्नायें सारी तज जाये व्यर्थ, अन्तः भावनायें कैसे करें योगदान।
अहसासों के फलीभूत होने को, चित्त चित्तवन लेता यें कैसा इम्तिहान।
बगैर लिखें भी रहा ना जाये, बेताब मन हो जाये फिर और परेशान।
फिर यूँ ही प्रयास बारम्बार करूँ, कि लिखने का निकले कोई समाधान॥
सोच सोच के दिन बीत गया, और सोच सोच में ही बीत रही यें निशा।
दिल की यें बेताबी रह जाये ख्वाबी, कैसे दूँ शब्द रस को एक नयी दिशा।
बड़े जतन से भी कुछ ना सूझे, कि कुछ लिखदूँ कविता का हिस्सा।
जरूरी कल्पनायें भी रह जाये अधूरी, ना पूरा हो कोई कल्प किस्सा।।–2

क्या लिखूँ कुछ आये ना अन्तः प्रत्यय में, सजे नहीं शब्द श्रंगार।
जहन पर जोर नही जज्बात का, चित्त में रचते नहीं कोई विचार।
मुख मोती फूल झड़ते नहीं, मन मुकम्मल करें फिर कैसे बहार।
मन उपवन में सुर सुगंध नहीं, कैसे महकाये अब शब्दों के हार।।
क्या आलेखन क्या सुलेखन, और क्या गाये अब यें मन का शोर।
दिल की दीवारों को छत नहीं, जो महल बनाये धड़कन का जोर।

आस दर्श प्रकाश चित्तवन में चमके नहीं, ओझल होता नयनों का त्यौर।
अंतर्मन उदासीन हो लिखने को, मन नहीं आये शब्द अक्षर की लोर॥–3
खामोश होंठ यें झुकाये निगाहें, मन में ना कोई अब कल्पना सजती।
बीत रहा है वक्त खामोशियों में, जहन में ना बीन ब्रह्म की बजती।
शोर नहीं हो अब सूरत सीरत का, रूहे राहत रंग रोर नहीं गरजती।
त्यौर तृष्णा तंग करती तेज बड़ी, हृदय से यें जरब क्यों ना तजती।।
गर्ज गूढ़ कोई ना पड़ती जिगर में, जो निकाले भरे प्रेम की आवाज।
शोर रहा ना शहरे सरगोशी का, सजता नहीं सुरूरे सरगम का साज।
एक एक शब्द अक्षर को तरसे, बिना ताज का यें सुरमेय सरताज।
अरविन्द का चित्त विलमन में चहके, मिले कोई मर्ज मेहताबे राज॥–4

क्या लिखूं कुछ मन में ना आए, कुछ जोर जिगर पर चलता ना।
अन्तः आंतरिक प्रकाश के बिन, ज्ञान फूल चमन में खिलता ना।
ॐ नाम की ऋत राही के बिन, प्रकृति पत्ता तक भी हिलता ना।
अंतर्मन आनंद बिन बाहर कहीं, मन मजा कभी भी मिलता ना॥
क्या जतन करूँ जो संगीत मीत हो, दूर हो इस दिल की तन्हाई।
चित्त में परम की प्रीत हो जाये, बज जाये सम्भाव की शहनाई।
ऐसा उजाला हो दिल गीत में, हो जाये अंग अंग में रस रूशनाई।
देह धरा का रोम रोम थिरके, इस रूह की हो जाये मन चाहीं ॥–5

क्या लिखूं कुछ सूझे ना अभी, आये ना दिल में कोई मर्म विचार।
ऐसा कोई दृश्य स्रोत नहीं यहां अभी, जिसको करू मैं स्वरूप साकार।
मन स्मृति में कोई प्रत्यय नहीं बनते, भावना ले रही नहीं आकार।
ऐसा कोई अन्तः अंतरध्यान नहीं, जिसे बनाऊं लिखने का आधार॥
अक्षर दीपक शब्द स्रोत्रा के रस, सब होते ॐ ईश्वर आश्रित अधीन।
बिन विरक्ति भक्ति शक्ति उक्ति के, ना होती कल्पना तेज तल्लीन।
परम अक्षर ॐ रोम व्योम से ही, बनते शब्द हो के ब्रह्माण्ड विलीन।
निष्काम अनहद अमृत वाणी के, अरविन्द कैसे बजाए शब्दों की बीन।।–6

प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, दिल्ली क्षेत्र के अंतर्गत आयोजित सतर्कता सप्ताह, 2024 के छायाचित्र

केंद्रीय माल एवं सेवाकर, दिल्ली उत्तर के स्वच्छता ही सेवा 2024 कार्यक्रम की कुछ झलकियां!

स्वच्छता ही सेवा अभियान चलाया गया, जिसमें लेखा परीक्षा-1 कार्यालय के अधिकारीयों द्वारा स्वच्छता शपथ ली गई। आयुक्त और अपर आयुक्त सहित इस कार्यालय के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रधान मुख्य आयुक्त कार्यालय, दिल्ली क्षेत्र में हिंदी पखवाड़ा समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह के छायाचित्र।

केन्द्रीय माल और सेवाकर, दिल्ली पश्चिम
पखवाड़ा वर्ष-2024

केन्द्रीय माल और सेवाकर, दिल्ली पश्चिम
वर्ष-2024

केंद्रीय माल एवं सेवा कर, दिल्ली क्षेत्र की खेल प्रतिभाओं के सम्मान समारोह के छायाचित्र।

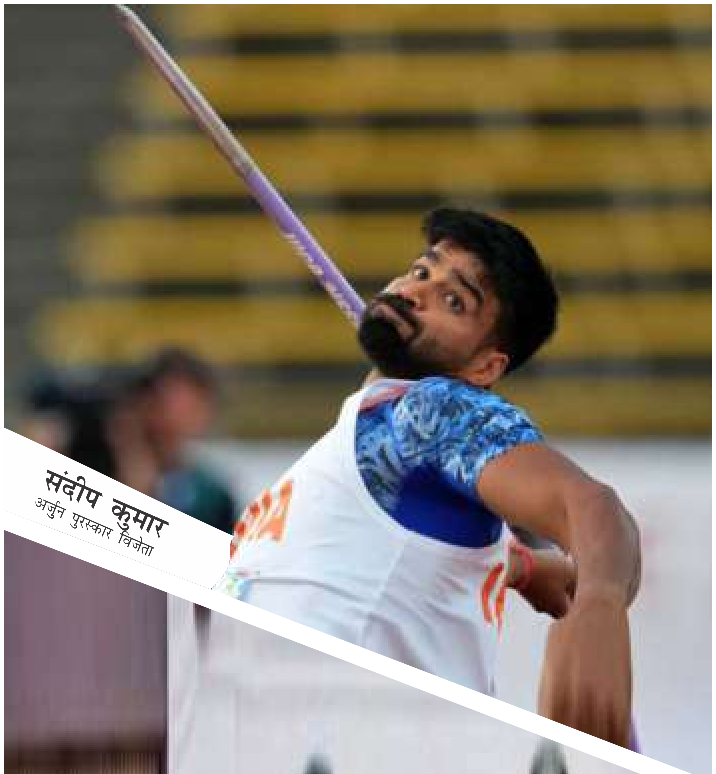

केंद्रीय माल एवं सेवाकर, दिल्ली क्षेत्र के नांगल राया, दिल्ली स्थित नवनिर्मित कार्यालय भवन।

साज-सज्जा एवं मुद्रक # 9811 541 836